दैनिक

कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

ट्रंप की धमकियां दरकिनार ... पेज 5

सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र का... पेज 7

वर्ष 6, अंक 301 | भोपाल, सोमवार 13 अप्रैल, 2026 | वैशाख कृष्ण पक्ष, एकादशी, 2083 | मूल्य 2 रुपए

बंगालः एक समृद्ध विरासत का 'मर्सिया' और उजड़ते कारखानों की गूँज

लेखकः अभिषेक द्विवेदी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

वह हुगली नदी, जिसके किनारों पर कभी दुनिया का भविष्य लिखा जाता था, आज मौन है। वह मिट्टी, जिसकी खुशबू में कभी व्यापार, साहित्य और क्रांति का संगम था, आज अपने ही बच्चों को रोजगार के लिए मीलों दूर बेंगलुरु और मुंबई भेजते हुए सिसक रही है। यह केवल एक राज्य के पिछड़ने की कहानी नहीं है, यह उस 'सोने की चिड़िया' के पिंजरे में तब्दील होने की व्यथा है, जिसने कभी पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को अपनी उंगलियों पर नचाया था।

जब दुनिया का केंद्र 'मुगल बंगाल' था :

इतिहास के पन्नों को पलटें तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 17वीं और 18वीं शताब्दी में बंगाल सिर्फ एक राज्य नहीं, बल्कि एक आर्थिक महाशक्ति था। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एंगस मैडिसन (Angus Maddison) के आंकड़ों के अनुसार, जब अंग्रेज भारत आए, तब वैश्विक जीडीपी में भारत की हिस्सेदारी लगभग 25% थी। इतिहासकारों और शोधकर्ताओं (जैसे विलियम डेलरिम्पल) का मानना है कि भारत की उस समृद्धि का 40% हिस्सा अकेले बंगाल के 'सूबे' से आता था।

ढाका की मलमल, मुर्शिदाबाद का रेशम और हुगली के तटों से निकलता व्यापार—बंगाल वह धुरी था जिसके इर्द-गिर्द वैश्विक अर्थव्यवस्था घूमती थी। फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने तब लिखा था, "बंगाल के पास वह सब कुछ है जो दुनिया को चाहिए, और दुनिया के पास ऐसा कुछ नहीं जिसकी बंगाल को कमी हो।"

बंटवारे का घाव और 'जूट' की बर्बादी :

1947 की आजादी अपने साथ एक ऐसा जख्म लाई जिसने बंगाल की रीढ़ तोड़ दी। बंगाल के पास देश की सबसे बड़ी जूट इंडस्ट्री थी। लेकिन बंटवारे की लकीर ने एक क्रूर मजाक कियाः जूट की सारी मिलें पश्चिम बंगाल (भारत) में रह गईं, लेकिन जूट उगाने वाले हरे-भरे खेत पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) चले गए। रातों-रात एक फलती-फूलती इंडस्ट्री कच्चे माल के लिए मोहताज हो गई। वह सुनहरा रेशा (Golden Fibre), जिसने कभी लाखों घरों के चूल्हे जलाए थे, राजनीति की भेंट चढ़ गया।

'फ्रेट इक्वलाइजेशन': बंगाल के हक पर डाका :

आजादी के बाद भी बंगाल हारा नहीं था। 1947 में भारत के कुल औद्योगिक उत्पादन में बंगाल की हिस्सेदारी 27% थी। लेकिन 1952 में भारत सरकार की 'फ्रेट इक्वलाइजेशन पॉलिसी' (माल ढुलाई समानता नीति) ने बंगाल के ताबूत में आखिरी कील ठोक दी।

इस नीति के तहत, बंगाल और बिहार के कोयले और लोहे को पूरे देश में एक ही कीमत पर उपलब्ध कराया गया। इसका मतलब यह था कि एक उद्यमी को फैक्ट्री लगाने के लिए बंगाल आने की जरूरत नहीं रही, उसे वही सस्ता लोहा चेन्नई या गुजरात में भी मिलने लगा। बंगाल के प्राकृतिक संसाधनों का लाभ पूरे देश को मिला, लेकिन बंगाल ने अपना 'तुलनात्मक लाभ' (Comparative Advantage) खो दिया।

जब 'घेराव' ने उद्यमिता का गला घोंटा :

1960 और 70 के दशक में बंगाल की गलियों में एक नया शब्द गूँजा—'घेराव'। ट्रेड यूनियनों की बढ़ती उग्रता और 'हड़ताल' की संस्कृति ने मालिकों और मजदूरों के बीच की खाई को नफरत से भर दिया। हुगली के किनारे लगी मिलों के सायरन धीरे-धीरे शांत होने लगे। बिड़ला और गोयनका जैसे बड़े औद्योगिक घराने, जिनका जन्म इस मिट्टी में हुआ था, अपना बोरिया-बिस्तर समेटने लगे। सांख्यिकी मंत्रालय (MOSPI) के आंकड़े बताते हैं कि आज भारत के औद्योगिक उत्पादन में बंगाल की हिस्सेदारी 27% से गिरकर महज 3% से 4% के बीच सिमट गई है।

वो 'हैंगओवर' और पलायन का दर्द :

आज बंगाल एक अजीब विरोधाभास में जी रहा है। हम आज भी इस गर्व में जीते हैं कि "जो बंगाल आज सोचता है, भारत कल सोचेगा।" लेकिन कड़वी हकीकत यह है कि आज बंगाल का युवा 'कल' की तलाश में अपना घर छोड़ रहा है। हावड़ा स्टेशन पर हर रोज हजारों युवा अपनी आँखों में आंसू और हाथ में डिग्री लिए 'बेंगलुरु' की ट्रेन पकड़ते हैं। यह 'बौद्धिक पलायन' (Brain Drain) बंगाल की सबसे बड़ी त्रासदी है।

गीत गुंजन से आशा जी को सांगीतिक श्रद्धांजलि...

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

विश्व प्रसिद्ध पार्श्व गायिका आशा भोंसले के निधन पर आज राजधानी में गीत गुंजन फाउंडेशन के गायक गायिकाओं ने उन्हीं के गाए गीत गाकर उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। गुंजन फाउंडेशन अकादमी में गुरु कैलाश यादव के सानिध्य में संगीत सीख रहे गायक गायिकाओं ने आशा जी के सोलो और युगल गीत गाकर उनकी विरासत को याद किया। कैलाश यादव और स्मिता निगम ने आशा जी और रफी साहब का युगल गीत,, फिर मिलोगे कभी इस बात का वादा कर लो,, गाया,, वही सुनील श्रीवास्तव और निशा श्रीवास्तव ने आशा जी का गीत दीवाना हुआ बादल गाया,, मधु तिवारी ने आशा जी का गीत ,,चुरा लिया है तुमने जो दिल को,, प्रस्तुत किया वही रीटा देराश्री ने ,,दम मारो दम ,, गाकर आशा जी को श्रद्धांजलि दी वही
रंजीव साहनी ने आशा जी का गीत ये मेरा दिल प्यार का

कैलाश यादव, स्मिता निगम

मधु तिवारी

सुरों की जादूगरनी आशा भोसले ने हर शैली में बिखेरा जलवा

स्मृति शेष... 8 दशकों का करियर और 12,000 से अधिक गाने गाए

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी मुंबई

भारतीय संगीत जगत की सबसे प्रभावशाली आवाजों में से एक, आशा भोसले का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। सुरों और मौलिकता के अद्भुत मेल के लिए जानी जाने वाली आशा जी ने आठ दशकों तक संगीत प्रेमियों के दिलों पर राज किया। आइए उनके जीवन के कुछ सुनहरे पहलुओं पर नजर डालते हैंः

आशा भोसले का जन्म 8 सितंबर, 1933 को महाराष्ट्र के सांगली में शास्त्रीय गायक पंडित दीनानाथ मंगेशकर के घर हुआ था। महज 9 साल की उम्र में पिता के निधन के बाद, उन्होंने अपनी बड़ी बहन लता मंगेशकर के साथ फिल्मों में गाना शुरू किया। 1943 में मराठी फिल्म 'माझा बाल' से उन्होंने अपना पहला गाना रिकॉर्ड किया। हिंदी सिनेमा में उनकी शुरुआत 1948 में फिल्म 'चुनरिया' के गीत 'सावन आया' से हुई थी। आशा जी अपनी सुरीली आवाज और हर तरह के गाने गाने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध थीं। उन्होंने फिल्म संगीत, पॉप, शास्त्रीय, भजन, गजल, कव्वाली और रवींद्र संगीत जैसी विभिन्न शैलियों में महारत हासिल की। उन्होंने 20 से अधिक भाषाओं में 12,000 से अधिक गाने रिकॉर्ड किए।

म्यूजिक आइकन्स के साथ जुगलबंदी की बात करें तो पचास से सत्तर के दशक के स्वर्णिम युग में उन्होंने मोहम्मद रफी, किशोर कुमार और आर.डी. बर्मन जैसे दिग्गजों के साथ मिलकर संगीत के नए मानक स्थापित किए। आशा भोसले के योगदान को देश और दुनिया ने कई बड़े सम्मानों से नवाजा गया, इनमें दादासाहेब फाल्के पुरस्कार (2000), पद्म विभूषण (2008), 1981 में 'उमराव जान' (दिल चीज क्या है) और 1987 में 'इजाजत' (मेरा कुछ सामान) के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार शामिल है। उनकी गायकी की रेंज इतनी बड़ी थी कि उन्होंने एक तरफ 'इन आंखों की मस्ती' जैसी गंभीर गजलें गाईं, तो दूसरी तरफ 'पिया तू अब तो आजा' और 'ये मेरा दिल' जैसे जोशीले कैबरे गीतों में जान फूंक दी। 90 के दशक में भी उन्होंने ए.आर. रहमान के साथ 'रंगीला रे' और 'तन्हा तन्हा' जैसे गानों के जरिए युवाओं के बीच अपनी लोकप्रियता बनाए रखी। 2013 में उन्होंने फिल्म 'माई' में मुख्य अभिनेत्री के तौर पर काम किया, जहां उनके अभिनय की भी काफी सराहना हुई।

भोंसले की लोकप्रियता भारत तक ही सीमित नहीं थी। 1997 में ब्रिटिश बैंड 'कॉर्नरशॉप' ने उन्हें समर्पित गाना 'ब्रिमफुल ऑफ आशा' रिलीज किया था, जो यूके के चार्ट्स में टॉप पर रहा। आशा भोसले भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपनी जादुई आवाज और सदाबहार गीतों के जरिए वे हमेशा अपने प्रशंसकों के दिलों में जीवित रहेंगी।

पुस्तकें हमें जीवन दृष्टि और चिंतन के नवीन सूत्र देती हैं -कुमार सुरेश

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

'पुस्तकें हमें जीवन दृष्टि और चिंतन के नवीन सूत्र देती हैं पुस्तकों का संसार और आधार प्राचीन समय से समृद्ध रहा है,पुस्तक संस्कृति का संवर्धन और संरक्षण हम सभी का दायित्व है | ' यह उदगार हैं वरिष्ठ साहित्यकार कुमार सुरेश के जो लघुकथा शोध केंद्र समिति भोपाल एवं अपना प्रकाशन द्वारा हिंदी भवन के नरेश मेहता कक्ष में आयोजित 'पुस्तक से मिलिए ' कार्यक्रम के प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे | आयोजन के आरम्भ में मंचस्थ अतिथियों का स्वागत केंद्र की और से पुष्पहारों से किया गया और केंद्र निदेशक कांता रॉय ने स्वागत उदबोधन देते हुए इस आयोजन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला | पुस्तक चर्चा के इस कार्यक्रम में 'हाइवे 'लघुकथा संग्रह रचनाकार शेफालिका श्रीवास्तव पर समीक्षक लघुकथा लेखक डॉ. विनीता राहुरीकर ने कहा की इस संग्रह की सभी लघुकथाएं हमारे जीवन और समाज का यथार्थ हैं | आयोजन में दूसरी पुस्तक जिसपर चर्चा हुई वह थी 'दिल्ली दास्तां ' सम्पादक कांता रॉय इस कृति पर अपनी बात रखते हुए समीक्षक सुनीता प्रकाश ने कहा इस संग्रह की लघुकथाएं सिर्फ लघुकथा नहीं बल्कि दिल्ली महानगर का दस्तावेज हैं | इसी क्रम में लघुकथा संग्रह 'हाथी के दांत' लेखक सतीश चंद्र श्रीवास्तव पर चर्चा में भाग लेते हुए समीक्षक श्रीमती वंदना अतुल जोशी ने कहा कि यह लघुकथाएं हमारे जीवन के आसपास की सच्चाई को पाठकों के सामने लाती हैं | आयोजन के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामराव वामनकर ने की उन्होने कहा कि -'वर्तमान समय में साहित्यकारों के समक्ष लेखन की अनेक नवीन चुनौतियां हैं | पुस्तक 'जिंदगी की अदालत में' लघुकथाकार मनोरमा पंत ने अपने लेखन अनुभवों को साझा किया और वरिष्ठ साहित्यकार राजेश तिवारी ने उनकी इन लघुकथा को अपने समय के लिए बहुत जरूरी कथाएं बताया | आयोजन में वरिष्ठ साहित्यकार बिहारी लाल सोनी के कथा संग्रह 'बड़े बाबू की बेटी ' पर अपने लेखन अनुभव साझा करते हुए अपनी सृजन यात्रा के सबंध में विचार रखे और वरिष्ठ समीक्षक गोकुल सोनी ने संग्रह की कहानियों पर अपनी बात रखते हुए उनके शीर्षक से कथानक एवं भाषा पर बात करते हुए इन्हें सहज सरल जीवन की जरूरी कथाएं बताया | कार्यक्रम का संचालन घनश्याम मैथिल 'अमृत 'ने किया और कार्यक्रम के अंत में ज्योति करंजगांवकर ने सभी उपस्थित जनो का आभार प्रकट किया कार्यक्रम में डॉक्टर विनीता राहुरीकर को लघुकथा प्रतियोगिता में चयनित उनकी श्रेष्ठ लघुकथा चयन हेतु इस अवसर पर शाल श्रीफल मान धन एवं अभिनंदन पत्र देकर सम्मानित किया गया |कार्यक्रम का संचालन घनश्याम मैथिल अमृत ने किया इस आयोजन में नगर के अनेक लघुकथा लेखक साहित्यकार एवं पाठक उपस्थित थे |

भाजपा केवल राजनीतिक दल ही नहीं बल्कि एक राष्ट्रवादी विचारधारा है : किशन सूर्यवंशी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 के अंतर्गत आज मध्य विधानसभा के महाराणा प्रताप मंडल में आयोजित प्रशिक्षण वर्ग में मुख्य वक्ता के रूप में सहभागिता की। इस अवसर पर सूर्यवंशी ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए संगठन की विचारधारा, कार्यपद्धति एवं जनसेवा के मूल्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता ही संगठन की सबसे बड़ी ताकत हैं और उनके माध्यम से ही सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक प्रभावी रूप से पहुंचाया जा सकता है।

उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनहितैषी योजनाओं की विस्तृत जानकारी साझा करते हुए कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे इन योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों तक

पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएं। साथ ही, उन्होंने संगठन को और अधिक मजबूत बनाने एवं सेवा के संकल्प को निरंतर आगे बढ़ाने पर जोर दिया। प्रशिक्षण वर्ग के दौरान कार्यकर्ताओं के साथ आत्मीय संवाद भी हुआ, जिसमें विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श कर संगठनात्मक गतिविधियों को और अधिक

प्रभावी बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान किया गया। सूर्यवंशी ने कहा कि भाजपा केवल राजनीतिक दल नहीं बल्कि एक राष्ट्रवादी विचारधारा है जिसके हम सभी संवाहक हैं इसके लिए हमारे कई नेताओं ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है । सत्र की अध्यक्षता कृष्णकांत चौरसिया ने की ।

अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई से आरम्भ होकर 28 अगस्त तक 57 दिनों तक चलेगी : रिंकू भटेजा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

ओम शिव शक्ति सेवा मंडल भोपाल के सचिव रिंकू भटेजा ने बताया कि इस वर्ष अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई से 28 अगस्त (रक्षा बंधन) तक चलेगी जो 57 दिनों की होगी। पिछले वर्ष यात्रा 38 दिनों की थी। 15 अप्रैल से ऑनलाइन, ग्रुप रजिस्ट्रेशन, बैंकों के माध्यम से रजिस्ट्रेशन प्रारंभ हो जाएंगे ।भोपाल में तीन बैंकों जम्मू कश्मीर बैंक जवाहर चौक , पंजाब नेशनल बैंक ,न्यू मार्केट ,स्टेट बैंक ऑफ इंडिया न्यू मार्केट में ऑफलाइन बायोमेट्रिक के माध्यम से रजिस्ट्रेशन होंगे। रिंकू भटेजा ने आगे बताया कि रजिस्ट्रेशन से पूर्व कंपलसरी हेल्थ सर्टिफिकेट बनाना अनिवार्य होता है श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड द्वारा भोपाल में मात्र 4 डॉक्टर्स अधिकृत किए हैं , जो कि भोपाल शहर एवं इसके आस पास के ग्रामीण क्षेत्र के हिसाब से मेडिकल करने के लिए कम हैं । भोपाल एवं ग्रामीण क्षेत्र से लगभग प्रति वर्ष लगभग दस हजार से ज्यादा भोले के बाबा बर्फानी के दर्शन करने जाते हैं ।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

प्रदेश में लू की आहट... 16 अप्रैल से भीषण गर्मी के आसार, शहरों में तापमान बढ़ने लगा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आंधी-बारिश का दौर खत्म होते ही मध्य प्रदेश में तेज गर्मी का असर शुरू हो गया है। रविवार को 5 शहरों में दिन का तापमान 40 डिग्री के पार रहा। रतलाम में सबसे ज्यादा 41 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम केंद्र, भोपाल की माने तो प्रदेश में अब भीषण गर्मी पड़ेगी। 16 अप्रैल से हीट वेव यानी, लू का असर शुरू होगा। मौसम विभाग के अनुसार, मालवा-निमाड़ यानी, इंदौर और उज्जैन संभाग के शहर सबसे गर्म हैं। रविवार को इन्हीं शहरों में पारा बढ़ा हुआ रहा।

रतलाम के बाद खजुराहो में 40.4 डिग्री, धार, मंडला-नर्मदापुरम में 40.2 डिग्री, दमोह, रीवा-टीकमगढ़ में 39.5 डिग्री, खरगोन में 39.2 डिग्री, रायसेन, छिंदवाड़ा, उमरिया, सतना और मलाजखंड में पारा 39 डिग्री, बैतूल-सागर में 38.8 डिग्री, गुना-शाजापुर में 38.4 डिग्री, नौगांव में 38.2 डिग्री, खंडवा में 38.1 डिग्री, सिवनी-सीधी में 38 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

प्रदेश के 5 बड़े शहरों की बात करें तो इंदौर में सबसे ज्यादा 39.2 डिग्री, भोपाल में 38.6 डिग्री, ग्वालियर में 36.1 डिग्री, उज्जैन में 38.5 डिग्री और जबलपुर में पारा 38.7 डिग्री सेल्सियस रहा।

मौसम विभाग के अनुसार, 15 अप्रैल को नया सिस्टम एक्टिव हो रहा है, लेकिन यह कमजोर रहेगा। यानी, अब प्रदेश में तेज गर्मी वाला दौर ही रहेगा। गर्मी बढ़ने से लोग उससे बचने के तरीके भी तलाश रहे हैं। कोई मुंह पर कपड़ा बांधकर घर से बाहर निकल रहा है तो कोई गन्ने का ज्यूस, कोल्ड्रिंक्स, आइस्क्रीम का लुत्फ उठा रहा है। गर्मी का असर बढ़ते ही मौसम विभाग ने बचाव की एडवाइजरी भी जारी की है।

लोगों से कहा गया है कि वे दिनभर पर्याप्त पानी पिएं और शरीर को हाइड्रेट रखें। दोपहर के समय लंबे समय तक धूप में न रहे। हल्के वजन और रंग के सूती कपड़े पहनें। बच्चे और बुजुर्ग खासतौर पर ध्यान रखें। वहीं, 16 अप्रैल से तेज गर्मी का दौर शुरू हो जाएगा। धार, खरगोन, खंडवा, सीधी और सिंगरौली में लू चलने का अलर्ट है।

बता दें कि अबकी बार अप्रैल में भीषण गर्मी की बजाय आंधी-बारिश और ओले वाला मौसम रहा। 1 से 9 अप्रैल तक प्रदेश में कहीं न कहीं मौसम बदला। इस दौरान ग्वालियर में सबसे ज्यादा पानी गिरा। 15 से ज्यादा जिलों में ओलावृष्टि हुई तो करीब 45 जिलों में पानी गिरा।

अप्रैल के दूसरे पखवाड़े में पड़ती है तेज गर्मी

मौसम विभाग के अनुसार, जिस तरह दिसंबर-जनवरी में सर्दी और जुलाई-अगस्त में सबसे ज्यादा बारिश होती है, उसी तरह गर्मी के दो प्रमुख महीने अप्रैल और मई हैं। अप्रैल के दूसरे पखवाड़े से तेज गर्मी पड़ती है।

इस साल जनवरी में बारिश नहीं हुई, लेकिन फरवरी और मार्च में 4-4 बार मौसम बदला। ठंड के मौसम में ही फरवरी में मौसम का मिजाज बदल गया। शुरुआत में ही प्रदेश में दो बार ओले, बारिश और आंधी का दौर रहा। इससे फसलों को खासा नुकसान हुआ था।

इसके बाद सरकार ने प्रभावित फसलों का सर्वे भी कराया था। 18 फरवरी से तीसरी बार प्रदेश भीग गया है। 19, 20 और 21 फरवरी को भी असर रहा। फिर चौथी बार 23-24 फरवरी को भी ओले-बारिश का दौर रहा।

मार्च में गर्मी के सीजन की शुरुआत हो गई। पहले पखवाड़े में तेज गर्मी वाला मौसम रहा। दूसरे पखवाड़े में बारिश शुरू हो गई। एक दौर लगातार 4 दिन तक रहा। इस दौरान 45 से ज्यादा जिलों में आंधी-बारिश हुई। वहीं, 17 जिलों में ओले भी गिरे। इससे गेहूं, पपीता और केले की फसलें बर्बाद हुई है।

तीसरा दौर 26-27 मार्च को रहा। 27 मार्च को सतना, रीवा, दतिया और भिंड में बारिश हुई। सतना के चित्रकूट में आंधी चलने और बारिश होने की वजह से दीप सज्जा के कार्यक्रम पर असर पड़ा था। चौथी बार मौसम ने 29-30 मार्च को फिर से करवट बदली है। 30 मार्च को एमपी के आधे हिस्से में कहीं बारिश-आंधी तो कहीं ओले भी गिरें।

खाते में पैसा आते ही निकाल रहीं 'लाड़ली बहना'

अब सर्वे से जानेंगे- छोटे खर्चों में कितनी आत्मनिर्भर हुईं

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

लाड़ली बहना योजना को जून 2026 में 3 साल पूरे होने जा रहे हैं। जून 2023 से अब तक सवा करोड़ महिलाओं के खाते में करीब 52 हजार करोड़ रुपए डाले जा चुके हैं। 40,800 रुपए औसतन हर महिला को मिल चुके हैं। सुशासन संस्थान का आंकलन है कि इस पैसे को खाते में आते ही महिलाएं निकाल रही हैं। यानी पैसा मार्केट में आ रहा है।

इसके चलते संस्थान बड़े स्तर पर इंपेक्ट असेसमेंट कराने जा रहा है। ये तीन बिंदुओं पर केंद्रित है। पहला- महिलाओं को अब छोटे खर्चों के लिए पुरुषों पर तो निर्भर नहीं रहना पड़ रहा। दूसरा- यूपीआई के जरिए स्वयं लेन-देन कर रही हैं या नहीं और तीसरा- परिवार के निर्णयों में उनकी भूमिका बढ़ी है या नहीं।

योजना बनाते समय राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वे में महिलाओं की स्थिति व स्वास्थ्य का जिक्र किया गया था। राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वे-5 के अनुसार, प्रदेश में 23% महिलाओं का बॉडी मास इंडेक्स कम है। 15-49 वर्ष की महिलाओं में एनीमिया का स्तर 57.4% है। असेसमेंट में इन पहलुओं का भी आकलन होगा।

इसके लिए दस संभागों में टीमें बना दी गई हैं। संस्थान के उपाध्यक्ष राजीव दीक्षित के अनुसार योजना का दायरा बड़ा होने से मूल्यांकन में समय लग रहा है। इधर, विशेषज्ञों ने सवाल उठाया है कि इतनी बड़ी राशि वाली योजना का सामाजिक और स्वास्थ्य पर प्रभाव अब तक मापा ही नहीं गया है। तुरंत इस योजना का स्वतंत्र संस्था से मूल्यांकन होना चाहिए।

देवी अहिल्या विवि के स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स के प्रोफेसर कन्हैया आहूजा का कहना है, पैसा बाजार में जरूर आ रहा है। इससे जीएसडीपी पर तो असर पड़ा है। वहीं वित्त विभाग में पूर्व डायरेक्टर रहे नितिन नांदगांवकर का कहना है कि नकद राशि के साथ पोषण आधारित हस्तक्षेप, जैसे फोर्टिफाइड आटा जोड़ा जाए तो महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार संभव है। अभी योजना की राशि का उपयोग मुख्यतः खाने और घरेलू सामान पर हो रहा है, जिससे मांग तो बढ़ी है। सीएम डॉ. मोहन यादव ने सीहोर जिले के आष्टा में महिला सशक्तिकरण सम्मेलन में कहा कि बहन- बेटियों के विकास के बिना समग्र विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। अब लोकसभा और विधानसभा में बहनों को 33% आरक्षण सुनिश्चित होगा। इसके लिए संसद की विशेष बैठक 16 अप्रैल से होगी। सीएम ने आष्टा में रोड शो भी किया।

सब-जूनियर नेशनल चैंपियनशिप: बेटियों के बाद बेटों ने भी रचा इतिहास, दोनों टीमों ने जीता रजत

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मप्र हॉकी में नई ताकत बनकर उभर रहा है। रांची में आयोजित 16वीं हॉकी इंडिया सब-जूनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप 2026 में प्रदेश की महिला और पुरुष दोनों टीमों ने शानदार खेल दिखाते हुए रजत पदक अपने नाम किए। दोनों टीमों ने पूरे टूर्नामेंट में अनुशासित रणनीति, आक्रामक खेल और बेहतरीन टीमवर्क का प्रदर्शन कर प्रदेश का मान बढ़ाया।

मध्यप्रदेश महिला हॉकी टीम ने पूरे टूर्नामेंट में शानदार लय बनाए रखी। फाइनल में मेजबान झारखंड के खिलाफ टीम ने 2-1 के करीबी मुकाबले में अंत तक संघर्ष किया। गीताश्री ने शुरुआती गोल दागकर टीम को बढ़त दिलाई और मैच के दौरान दबाव बनाए रखा।

सेमीफाइनल में ओडिशा जैसी मजबूत टीम को हराकर फाइनल तक पहुंचना टीम की तैयारी और संयम का बड़ा प्रमाण रहा।

विजयी एमपी की टीम।

विजयी एमपी की टीम।

टीम में महक परिहार, साजेदा बेगम, शालिनी सिंह, स्नेहा दवाड़े, मानसी, प्रियंशी केश्त्रे, सुदीप्ता, नौसीन नाज, गीता श्री, भाविका, जागृति, आक्शा खान, सादफ खान और मुस्कान रघुवंशी सहित कई प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में अनुशासन और समर्पण का परिचय दिया। यह टीम भविष्य की बड़ी उम्मीद के रूप में उभर रही है।

पुरुष टीम ने भी दिखाया दम, आक्रामक खेल से जीता दिल

मध्यप्रदेश पुरुष हॉकी टीम ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक हासिल किया। फाइनल में उत्तर प्रदेश के खिलाफ टीम ने 5-2 का स्कोर खड़ा कर दमदार खेल दिखाया। गाजी खान ने शुरुआती गोल कर टीम को बढ़त दिलाई, इसके बाद करण गौतम ने बढ़त को मजबूत किया। पूरी टीम ने सटीक पासिंग, तेज अटैक और शानदार तालमेल का प्रदर्शन किया।

पुरुष टीम में युवा प्रतिभाओं का दमदार प्रदर्शन-

राजक आयुष, अंश बहुतरा (कप्तान), अवि माणिकपुरी, अली गुफरान, करण गौतम, गाजी खान, हर्षित धोते (गोलकीपर) सहित टीम के सभी खिलाड़ियों ने एकजुट होकर खेला और अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

खेल मंत्री विश्वास सारंग ने दी बधाई

प्रदेश के खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने दोनों टीमों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि खिलाड़ियों की मेहनत, कोचिंग स्टाफ के मार्गदर्शन और राज्य में विकसित खेल सुविधाओं का परिणाम है। उन्होंने विश्वास जताया कि प्रदेश के खिलाड़ी आगे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और बड़ी

स्मार्ट सिटी पार्क से मेट्रो का डिस्प्ले कोच हटा, डिपो में रखवा

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

स्मार्ट रोड स्थित स्मार्ट पार्क में रखा मेट्रो ट्रेन का कोच डिपो में शिफ्ट कर दिया गया है। अगस्त 2023 में स्मार्ट पार्क में मेट्रो का यह कोच पब्लिक डिस्प्ले के लिए रखा था। लगभग 5 करोड़ रुपए की लागत के इस कोच में पूरी वैसी ही सुविधाएं हैं, जैसी मेट्रो ट्रेन में होती हैं। इसमें बैठ कर लोग वैसा ही अनुभव ले सकते थे जैसा कि मेट्रो में सफर के दौरान होता है। मेट्रो का संचालन शुरू होने से पहले कोच को आम जनता के लिए डिस्प्ले के लिए रखने का उद्देश्य ही यह होता है कि लोग मेट्रो के संचालन को समझ सकें। मेट्रो कंपनी का दावा है कि इस कोच में एक लाख से अधिक लोगों ने मेट्रो का अनुभव लिया। भोपाल में मेट्रो का संचालन शुरू हो गया है, इसलिए कोच को डिपो में शिफ्ट कर दिया है। मेट्रो के इस कोच में वास्तविक कोच जैसा अनुभव होता है। लोग मेट्रो के बारे में जान सकें, इसलिए यह डिस्प्ले कोच 2023 में रखा गया था।

निगम ने गन्ने के वेस्ट से बनवाई सीएनजी... बाजार से कम रेट में मिलेगी, शहर में हर दिन 15 से 20 टन वेस्ट निकलता है

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी की सड़कों पर गर्मियों में दिखने वाला गन्ने का वेस्ट (खोई) अब कचरा नहीं, बल्कि शहर की रफ्तार बनेगा। नगर निगम ने एक अनूठी पहल करते हुए गन्ने के वेस्ट से सीएनजी बनाने का सफल ट्रायल पूरा कर लिया है। इसमें एक निजी प्लांट संचालक ने निगम को खोई से सीएनजी बनाकर सफल ट्रायल दिखाया है। खास बात यह है कि यह सीएनजी निगम को बाजार भाव से कुछ कम रेट पर उपलब्ध होगी, जिससे निगम के खर्चों में कटौती होगी और पर्यावरण भी साफ रहेगा।

शहर में भीषण गर्मी के बीच करीब 1500 से 2000 गन्ने की चरखियां संचालित हो रही हैं। इनसे रोजाना 15 से 20 टन वेस्ट निकलता है। अब तक इस कचरे को आदमपुर खंती ले जाना पड़ता था, जहां खाद बनने में 50 दिन लगते थे।

अब प्राइवेट कंपनी इस कचरे को सीधे कलेक्शन सेंटर से उठाएगी, जिससे निगम का ट्रांसपोर्टेशन खर्च शून्य हो जाएगा। शुरुआत में अभी 3 टन की वेस्ट सीएनजी प्लांट पहुंच पा रहा है। कंपनी ने बड़े वाहन को लगाया है, जिससे हर दिन करीब 15 से 20 टन वेस्ट प्लांट को मिलेगा।

खर्च में कमीः आदमपुर खंती तक कचरा ढोने का डीजल बचेगा। जल्द निपटानः जो वेस्ट खाद बनने में 50 दिन लेता था, उससे चंद दिनों में ईंधन बनेगा।

सस्ता ईंधनः निगम को कम दाम पर सीएनजी मिलेगी, जिससे जनता के पैसे की बचत होगी।

विशेषज्ञों के मुताबिक, 100 टन गन्ने के वेस्ट से लगभग 4 प्रतिशत यानी 4000 किलोग्राम सीएनजी तैयार होती है। ट्रायल के दौरान गन्ने के रेशों से सफलतापूर्वक गैस बनाई गई है। कंपनी ने निगम को बाजार रेट से सस्ती गैस देने का ऑफर भी दिया है।

रोजाना 20 टन गन्ने का वेस्ट मिलता है तो रोजाना निगम को 800 किलोग्राम सीएनजी मिल सकेगी। निगम को अपनी 275 गाड़ियों के लिए रोजाना लगभग 1200 किलो सीएनजी की जरूरत होती है। यानी 65 फीसदी से अधिक मांग पूरी हो सकती है, लेकिन यह केवल गर्मी के दिनों में ही होगा।

300 दुकानदारों को किया अलर्ट... निगम ने करीब 300 चरखी संचालकों को निर्देश दिए। दुकानदार गन्ने के वेस्ट को अलग बोरियों में भर रहे हैं। निगम की गाड़ियां यह वेस्ट कचरा स्टेशन पहुंचाती हैं, वहां से कंपनी के कर्मचारी उसे रातीबढ़ स्थित सीएनजी प्लांट ले जाते हैं।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बरगद, पीपल और नीम ये तीनों पवित्र वृक्ष जब एक ही स्थान पर संगम बनाते हैं, तो वह स्थल अपने आप में एक दिव्य "त्रिवेणी" का स्वरूप धारण कर लेता है। गुरु पूर्णिमा महोत्सव, जुलाई 2010 का वह पावन अवसर आज भी हृदय में श्रद्धा और आनंद की अनुभूति कराता है, जब मेरी हार्दिक इच्छा दादाजी धाम में इस त्रिवेणी वृक्ष के रूप में साकार हुई।

दादाजी की कृपा और अनुमति से, उसी दिन परम पूज्य दादाजी गुरुदेव साईंखेड़ा वाले के शुभ करकमलों द्वारा त्रिवेणी का वृक्षारोपण किया गया। वह क्षण केवल एक वृक्ष लगाने का नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक ऊर्जा के बीज बोने का था जिसने समय के साथ एक विराट, जीवंत और दिव्य स्वरूप धारण कर लिया।

आज वही त्रिवेणी वृक्ष अपने विशाल और भव्य रूप में दादाजी धाम की शोभा बढ़ा रहा है। इसकी छाया में आते ही मन को अद्भुत शांति और आत्मिक सुकून का अनुभव होता है। भक्तजन जब इस पवित्र वृक्ष के समीप बैठकर ध्यान, जप और पूजा-अर्चना करते हैं, तो उन्हें ऐसा प्रतीत होता है मानो वे स्वयं ईश्वर की सान्निध्य में उपस्थित हों।

दादाजी धाम की विशेष पहचान यह अद्भुत बरगद का वृक्ष है, जिसमें पीपल का पौधा इस प्रकार समाहित हो गया है कि दोनों एक ही तने से उत्पन्न होते हुए प्रतीत होते हैं। पास ही स्थित नीम का वृक्ष इस संगम को पूर्णता प्रदान करता है। यह प्राकृतिक त्रिवेणी केवल एक वनस्पति संगम नहीं, बल्कि सृष्टि के तीन गुणों सत्व, रज और तम का प्रतीक भी है, जो जीवन के संतुलन और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दर्शाता है। मान्यता है कि इस पवित्र संगम को परमहंसी दादाजी ने स्वयं स्थापित किया था। भक्तजन इसे केवल एक वृक्ष नहीं, बल्कि दादाजी की जीवंत उपस्थिति और आशीर्वाद के रूप में मानते हैं। श्रद्धालु यहाँ दीप प्रज्वलित करते हैं, जल अर्पित करते हैं और सच्चे मन से अपनी प्रार्थनाएँ समर्पित करते हैं। अनेक भक्तों ने अनुभव किया है कि यहाँ की गई प्रार्थना शीघ्र ही

फलदायी होती है और जीवन में सुख-शांति का संचार करती है।

प्रातःकाल और संध्या के समय जब मंदिर में घंटियों की मधुर ध्वनि गूंजती है, धूप और अगरबत्ती की सुगंध वातावरण को पवित्र करती है, तब इस त्रिवेणी वृक्ष के समीप बैठकर की गई पूजा-अर्चना आत्मा को एक नई ऊर्जा से भर देती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो दादाजी गुरुदेव स्वयं वहाँ उपस्थित होकर अपने भक्तों को आशीर्वाद प्रदान कर रहे हों।

यह त्रिवेणी वृक्ष आज केवल एक आकर्षण का केंद्र नहीं, बल्कि दादाजी धाम की आध्यात्मिक पहचान, आस्था का प्रतीक और श्रद्धालुओं के लिए एक अमूल्य धरोहर बन चुका है। यहाँ आकर हर भक्त अपने मन की व्याकुलता को शांति में और अपने जीवन को नई दिशा में परिवर्तित होते हुए अनुभव करता है।

जया आर्या की संस्मरण कृति "मेरा आसमान" लोकार्पित और विमर्श

"जया आर्या जी के व्यक्तित्व में जो बचपन सुरक्षित है वही इनका लेखिका के रूप में इनकी दूसरी पारी की सफलता का राज है। -सुरेश पटवा

"रेडियो उद्घोषिका के रूप में लंबी सेवा के बाद एक लेखिका के रूप में स्थापित होना जया आर्या जी की एक बड़ी उपलब्धि है।" -गोकुल सोनी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केंद्र के तत्वाधान में जया आर्या के संस्मरण संग्रह "मेरा आसमान" का लोकार्पण एवं पुस्तक विमर्श समारोह प्रबुद्ध साहित्यकार सुरेश पटवा और वरिष्ठ साहित्यकार गोकुल सोनी के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित साहित्यकारों को संबोधित करते हुए सुरेश पटवा ने कहा कि "अब जबकि भारत में औसत आयु 72 वर्ष से ऊपर पहुंच गई है तब लोग दूसरी पारी की सफलता का जश्न मनाने लगे हैं। जया आर्या जी ने 77 वर्ष की उम्र में पाँच किताबें लिखकर दूसरी पारी की महत्ता प्रतिपादित की है।" गोकुल सोनी ने जया जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी साहित्यिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण बताया एवं कहा कि जया आर्य के पास भावनाओं एवं स्मृतियों का खजाना है, वे जो लिखती हैं दिल से लिखती हैं।" श्री वी के श्रीवास्तव ने पुस्तक पर विचार रखते हुई कहा कि "लेखिका ने स्मृति से बहुत विस्तृत और अनोखे संस्मरण इस किताब में पिरोए हैं, जिनको पढ़कर इनके विशाल अनुभव की झलक मिलती है।" शोध केंद्र के निदेशक महेश सक्सेना ने जया जी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुई सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर दिव्यांग फाल्गुनी मिश्रा ने मनमोहक भजन प्रस्तुत किया। इसी अवसर पर विवेक रंजन श्रीवास्तव को उनकी की नाट्य कृति "जलनाद" को अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संस्थान द्वारा उन्हें प्रदत्त "नंदन नंदनी नाट्य सम्मान" से अलंकृत किया था।

कार्यक्रम का संचालन सुप्रसिद्ध संयोजक एवं सफल उद्घोषक विमल भंडारी ने किया और आभार प्रदर्शन डाक्टर गिरिजेश सक्सेना ने किया। इस अवसर पर अशोक निर्मल, मनोज जैन मधुर, बी एल गोहिया जी, मधुलता शर्मा, मंजु पटवा जी, मृदुल त्यागी, शारदा दयाल श्रीवास्तव, विपिन बिहारी बाजपेयी, श्रीराम माहेश्वरी, और अन्य अनेकों गणमान्य साहित्यकार उपस्थित रहे।

चित्रगुप्त जी की जयंती 23 अप्रैल के अवसर पर निकलने वाली भव्य शोभा यात्रा के पोस्टर का विमोचन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, मध्यप्रदेश शासन के कैबिनेट मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने रविवार को चित्रांश समाज के आराध्यदेव चित्रगुप्त जी की जयंती 23 अप्रैल के अवसर पर निकलने वाली भव्य शोभा यात्रा के पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर अजय श्रीवास्तव नीलू मेजर श्याम श्रीवास्तव प्रदीप श्रीवास्तव रीना सक्सेना संजीव श्रीवास्तव संजू (संयोजक, आयोजन समिति) आशीष श्रीवास्तव वेद आशीष श्रीवास्तव उदय श्रीवास्तव आलोक श्रीवास्तव जी एम जौहरी राजेश नारायण श्रीवास्तव अभय प्रधान (प्रवक्ता) शिवकुमार श्रीवास्तव श्री श्रीवास्तव दीप श्रीवास्तव ओपी श्रीवास्तव संजीव श्रीवास्तव गिरीश श्रीवास्तव राजीव

सक्सेना उमेश सक्सेना नितिन श्रीवास्तव अभिषेक श्रीवास्तव राजेश वर्मा राजीव सक्सेना जयशंकर श्रीवास्तव सुनील श्रीवास्तव प्रेम अस्थाना राजेंद्र श्रीवास्तव केके सक्सेना रूपेश श्रीवास्तव सहित अनेक चित्रांश बंधु उपस्थित हुए।

विमोचन के पश्चात जवाहर चौक मंदिर पर सभी की उपस्थिति में आगामी 23 अप्रेल 2026 को निकलने वाली भव्य शोभा यात्रा के सम्बन्ध में भोपाल के सभी संगठन के पदाधिकारी उपस्थित हुए व सभी ने अपने विचार रखे और अपने संगठन की ओर से व अपने निजी रूप से पूर्ण भरपूर सहयोग प्रदान करने हेतु आश्वासन भी दिया। अधिक से अधिक संख्या में उक्त आयोजन की सूचना व्यक्तिगत रूप से और सोशल मीडिया के माध्यम से प्रेषित करने पर सभी ने सहमति दी।

लघुकथा में सीमित सार युक्त विचार प्रस्तुत करना ही परिपक्व लेखन है -शीला मिश्रा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

हिंदी लेखिका संघ की लघु कथा पाठ गोष्ठी विश्व संवाद केंद्र में संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार शीला मिश्रा ने की और मुख्य अतिथि के तौर पर वरिष्ठ लघुकथाकार श्री चरणजीत सिंह कुकरेजा उपस्थित रहे । कार्यक्रम में लगभग 20 बहनों ने लघु कथा का पाठ किया। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य देते हुए लेखिका संघ की वर्तमान अध्यक्ष डॉ साधना गंगराड़े ने कहा कि लेखिकासंघ हमेशा विधा आधारित गोष्ठियाँ करती रही है। अध्यक्षीय उद्बोधन में शीला मिश्रा जी ने अपने उद्बोधन में कहा आज की लेखिकाएँ शब्दों की साधना कर रही है।लघुकथा घटना व अनुभवों को व्यक्त करती है। लघुकथा में सीमित शब्दों में सार युक्त बातें कही जाती है। श्री चरणजीत सिंह कुकरेजा जी ने लघुकथा की बारीकियों को समझाते हुए बताया कि नवीन विषय लेकर लघुकथाएं प्रस्तुत की गयी। आपने 'गृहलक्ष्मी की सीख' लघुकथा प्रस्तुत की।

लघुपाठ करने वाली बहनों ने विभिन्न शीर्षकों से लघु कथा का पाठ किया ।

महिमा श्रीवास्तव वर्मा ,शालिनी खरे,निरुपमा खरे, ,मृदुल त्यागी ,मधुलिका सक्सेना

नीना सिंह सोलंकी .संगीता सूर्यप्रकाश मुरसेनिया .डॉ. मालती बसंत ,डॉ वर्षा ढोबले ,शीला श्रीवास्तव मधु सक्सेना, उषा चतुर्वेदी डॉ कुमकुम गुप्ता नविता जौहरी, सीमा स्वरागिनी प्रियंका श्रीवास्तव कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती सुनीता यादव, सरस्वती वंदना नीलू शुक्ला और आभार मधुलिका श्रीवास्तव ने किया। लेखिकासंघ से सुनीता यादव, अनीता सक्सेना, कल्पना विजयवर्गीय, साधना शुक्ला नीलिमा रंजन सहित कार्यक्रम में लगभग भोपाल के सभी वरिष्ठ साहित्यकार एवं साहित्य सुधिजन उपस्थित रहे।

डॉ. भीमराव आंबेडकर जयंती बीएचईएल एससी एंड एसटी एम्प्लॉईज वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा अम्बेडकर भवन बरखेड़ा पर मनाई जाएगी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बोधिसत्व, भारतरत्न, संविधान के शिल्पकार, ज्ञान के प्रतीक, क्रांतिसूर्य, दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव आंबेडकर जी की 135वीं जयंती को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ बीएचईएल एससी एंड एसटी एम्प्लॉईज वेलफेयर एसोसिएशन (भेल-सेवा) भोपाल के तत्वावधान में अम्बेडकर भवन बरखेड़ा पर मनाई जाएगी। डांस प्रतियोगिता सोलो एण्ड ग्रुप का ऑडिशन 5 अप्रैल रविवार सुबह 10 बजे से शाम 6:30 बजे तक किया गया था जिसमें सेकंडों प्रतिभागियों ने भाग लिया। डांस प्रतियोगिता का फायनल 14 अप्रैल को शाम 7.30 से 9.00 बजे तक होगा जिसमें अलग-अलग वर्गों में प्रथम द्वितीय और तृतीय के अलावा सांत्वना पुरस्कार दिए जाएंगे।

ड्राइंग प्रतियोगिता 14 अप्रैल को शाम 6 बजे से 7.30 बजे तक आयोजित की जाएगी जिसमें बच्चों की कक्षाओं के आधार पर विषय निम्नानुसार रखें गए हैं। कक्षा दुसरी तक- मेरा पसंदीदा जानवर/ फल, कक्षा 3 से 5वीं तक- पेड़-पौधे और प्रकृति, कक्षा 6 से 8वीं तक- आज का छात्र कल का भविष्य, और कक्षा 9वीं से अधिक- भारतरत्न, बाबा साहेब डाक्टर भीमराव अम्बेडकर जी का सामाजिक न्याय में योगदान। ड्राइंग प्रतियोगिता के प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार दिये जाएंगे।

अम्बेडकर भवन पर आयोजित डांस प्रतियोगिता, ड्राइंग प्रतियोगिता, आम्बेडकर प्रतिभा परीक्षा 2026 में चयनित बच्चों को स्कॉलरशिप, समाज सेवा में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए सावित्री बाई फुले, बिरसा मुंडा एवं आम्बेडकर शिक्षा रत्न पुरुस्कार भेल क्षेत्र के आसपास में संचालित एम एल बी कन्या स्कूल, सत्यसांई स्कूल, महात्मा गांधी और अन्य सरकारी स्कूलों के बच्चों की भवन की टीम द्वारा ली गई लिखित परीक्षा में उत्कृष्टता के आधार पर 20 बच्चों को पुरस्कार और स्कालरशिप प्रदान की जाएंगी।

प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को भेल के कार्यपालक निदेशक श्री पी के उपाध्याय, श्रीमती उपाध्याय, महाप्रबंधक मानव संसाधन टी यू सिंह, महाप्रबंधक जी पी बघेल, हेमराम पटेल, एस के डोंगरे, एस टी लायजन अधिकारी मनीष ठाकुर, ओबीसी लायजन अधिकारी दिलीप कुमार, एस सी लायजन अधिकारी वी वी खरे, भेल सेवा के पूर्व अध्यक्ष आर के सिंह, वर्तमान अध्यक्ष ए के माहोर, महासचिव शैलेन्द्र नानवटकर, देवेन्द्र भारती, अशोक आदि के कर कमलों द्वारा प्रशस्ति पत्र, शील्ड और नकद पुरस्कार वितरित किए जाएंगे।

भेल-सेवा "अम्बेडकर भवन" की गतिविधियों में प्रमुख सेवाएं:- संस्था के निर्माण के समय से ही बाबासाहेब के मूल मंत्र शिक्षित बनो को सार्थक करने के प्रयास में जुट गई और अम्बेडकर भवन पर शाम के समय गरीब और असहाय छात्र छात्राओं के लिए बिना किसी वर्ग भेदभाव के फ्री कोचिंग क्लासेस का संचालन अनवरत करती आ रही है। विगत 15 सालों से कक्षा 1 से 12वीं तक के 20 विद्यार्थियों के शिक्षा का खर्च वहन संस्था कर रही है। आई टी आई और डिप्लोमा के विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी और गाइडेंस के साथ कैरियर गाइडेंस और शिक्षा से संबंधित सेमिनार का आयोजन करती आ रही है। 4000 से अधिक किताबों की लाइब्रेरी का संचालन भवन पर होता है। बाबा साहेब के विचारों का प्रचार प्रसार करना बाबा साहेब की लिखी किताबों के बारे में लोगों को जागरूक करना। बच्चों एवं महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न कार्यक्रमों, गोष्ठियों का आयोजन भी कर रही है। गणतंत्र और स्वतंत्र दिवस पर भवन पर ध्वजारोहण के साथ विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है। महात्मा गौतम बुद्ध, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, बिरसा मुंडा, रविदास, कबीर और समाज के उत्थान में योगदान करने वाले सभी महापुरुषों की जयंती मनाई जाती है।

अम्बेडकर भवन पर बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण प्रातः 8.00 बजे किया जाएगा, अम्बेडकर भवन से विशाल रैली निकाली जाएगी। ढोल-ढमाके के साथ नाचते गाते हुए यह रैली कमला नेहरू उद्यान में प्रातः 9.15 बजे पहुंच कर बाबा साहेब की अर्ध प्रतिमा पर माल्यार्पण करेगी। यह रैली भारतरत्न डाक्टर भीमराव अम्बेडकर उद्यान, बरखेड़ा पर प्रातः 9.30 बजे पहुंच कर भेल प्रबंधन द्वारा आयोजित मुख्य कार्यक्रम के समारोह में शामिल होंगी। बाबा साहेब की आदम कद प्रतिमा पर भेल के कार्यपालक निदेशक, महाप्रबंधक मानव संसाधन, भेल के महाप्रबंधकों, अधिकारियों, सुपरवाइजरों , कर्मचारियों और गणमान्य लोगों की उपस्थिति में माल्यार्पण के बाद भेल द्वारा संचालित विद्यालयों के एस सी, एस टी और ओबीसी छात्र-छात्राओं द्वारा परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को भेल प्रबंधन की ओर से प्रशस्ति पत्र और शील्ड देकर सम्मानित किया जाएगा।

जंग का असर साफ दिख रहा है!

ईरान के खिलाफ अमेरिका और इजराइल की जंग थम गई है और भारत में दो तरह के नैरेटिव बनाए जा रहे हैं। पहला, कि भारत कोई पाकिस्तान नहीं है और पाकिस्तान तो दलाली कर रहा है। हर प्लेटफॉर्म पर यह साबित करने की कोशिश की जा रही है कि पाकिस्तान जो कर रहा है वह मध्यस्थता नहीं है, बल्कि वह तो बिचौलिए वाला काम कर रहा है। हालांकि वह जो भी काम कर रहा है उससे उसकी हैसियत दुनिया में बढ़ रही है। कम से कम मुस्लिम देशों में तो वह सिरमौर बन ही रहा है। दूसरा नैरेटिव यह है कि भारत में जंग का असर नहीं पड़ने दिया गया। हर जगह इस बात को प्रचारित किया जा रहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कूटनीति और ऊर्जा सुरक्षा की नीति से भारत पर कोई असर नहीं हुआ। कूटनीति की कामयाबी इसमें बताई जा रही है कि भारत के आठ या नौ जहाज जंग के दौरान होर्मुज की खाड़ी से निकले। हकीकत इससे उलट है। भारत पर जंग का बड़ा असर हुआ है। वह असर दिख भी रहा है। अगर असर नहीं हो रहा होता तो जंग रूकने की घोषणा के साथ ही पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी कतर के दौरे पर नहीं चले जाते। विदेश मंत्री का संयुक्त अरब अमीरात का दौरा नहीं होता। जाहिर है कि भारत में तेल और गैस का संकट गहरा है और जंग थमने के बाद भी काफी समय तक जारी रहने की आशंका है। पश्चिम एशिया की जंग का असर भारत के हर सेक्टर पर हुआ है। अलग अलग सेक्टर पर हुए असर की अनेक कहानियां मीडिया में आ रही हैं, लेकिन सबसे बड़ा सबूत यह है कि हर एजेंसी एक एक करके भारत के आर्थिक विकास का अनुमान घटाती जा रही है।

ताजा आंकड़ा विश्व बैंक का आया है, जिसने भारत के सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी की विकास दर का अनुमान 7.2 से घटा कर 6.6 फीसदी कर दिया है। सबसे पहले गोल्डमैन सॉक्स ने विकास दर का अनुमान सात से घटा कर 5.9 फीसदी किया था। उसके बाद अर्नस्ट एंड यंग ने भी भारत के अनुमानित विकास दर में एक फीसदी की कमी करके इसे छह फीसदी पर रखा। खुद भारतीय रिजर्व बैंक ने विकास दर का अनुमान 7.2 से घटा कर 6.9 फीसदी कर दिया है। सोचें, विकास दर में रिजर्व बैंक ने 0.3 फीसदी, विश्व बैंक ने 0.6 फीसदी, ईएंडवाई ने एक फीसदी और गोल्डमैन सॉक्स ने 1.1 फीसदी की कमी की है। फिर भी भारत में कहा जा रहा है कि पश्चिम एशिया की जंग का असर नहीं होगा! भारत का सकल घरेलू उत्पाद चार ट्रिलियन यानी चार सौ लाख करोड़ रुपए के करीब है। इसमें एक फीसदी की कमी का मतलब है चार लाख करोड़ की कमी आना। इसके बावजूद कोई सरकार कहे और यह नैरेटिव बनवाए कि युद्ध का कोई असर नहीं हुआ है तो क्या कहा जा सकता है! ये आंकड़े आधिकारिक हैं और जंग के दौरान देश भर से जैसी खबरें आई हैं उनको देखें तो पता चलता है कि कितना बड़ा असर हुआ है।

सरकार ने कॉमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतों में एक मार्च को 115 रुपए और एक अप्रैल को 228 रुपए तक की बढ़ोतरी की। क्या 19 किलो के सिलेंडर की कीमत में 40 दिन के अंदर 343 रुपए की बढ़ोतरी को सामान्य माना जाएगा? ऊपर से अब भी कॉमर्शियल गैस की सप्लाई 28 फरवरी से पहले के मुकाबले 70 फीसदी ही हो रही है। यानी उपलब्धता कम है और कीमत ज्यादा हो गई। इससे देश के सभी शहरों में होटल, ढाबे, रेस्तरां आदि बंद हुए या उन्होंने अपना काम न्यूनतम कम कर दिया। गैस की महंगाई से अस्थायी तौर पर ही सही लाखों लोगों की नौकरी गई और खाना बनाना महंगा हुआ तो लोगों का पलायन शुरू हुआ। देश के हर शहर में रसोई गैस की कालाबाजारी की खबरें हैं। अलग अलग राज्य सरकारों की ओर से जारी आंकड़ों के आधार पर एक रिपोर्ट में बताया गया है कि कालाबाजारी रोकने के लिए एक लाख से ज्यादा छापे मारे गए। उधर विमान का ईंधन यानी जेट फ्यूल की कीमतों में बढ़ोतरी हुई, जिससे हवाई यात्रा महंगी हुई।

एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में 50 हजार से ज्यादा छोटी विनिर्माण इकाइयों के कामकाज पर असर हुआ और 20 हजार के करीब फैक्टरियां बंद हो गईं। गुजरात से लेकर राजस्थान और उत्तर प्रदेश से लेकर आंध्र प्रदेश तक कपड़े की फैक्टरियों में काम ठप हुआ तो केमिकल फैक्टरियां बंद हुईं, प्लास्टिक के सामान, खिलौने आदि बनाने वाली फैक्टरियों पर सबसे ज्यादा असर हुआ। चमड़े के उत्पाद बनाने वाली फैक्टरियों पर बड़ा असर हुआ। जिन फैक्टरियों से निर्यात होता था वहां काम पूरी तरह से ठप्प हुआ क्योंकि एक तरफ कच्चे माल की आपूर्ति कम हुई थी और दूसरी ओर शिपिंग काफी महंगी हो गई थी।

-हरिशंकर व्यास

अमृतकाल के रंगरेज़ और चुनावों के खरगोश!

बीजगणित तो कहता है कि असम में इस बार भाजपा कोई सरपट नहीं दौड़ रही है। कांग्रेस से उस का मुकाबला बराबर की टक्कर का है। हिमंत बिस्वा सरमा की लोकप्रियता-लकीर इस बीच इसलिए बहुत तेज़ी से नीचे लुढ़की है कि चुनाव अभियान के दौरान उन की हताशाजनित अहंकारी जुमलेबाज़ी को लोगों ने आमतौर पर नापसंद किया है। असम, केरल और पुडुचेरी की कुल 296 विधानसभा सीटों के लिए बृहस्पतिवार को हुए मतदान की कुछ नकारात्मक-सकारात्मक उपलब्धियों का ज़िक्र इसलिए ज़रूरी है कि हमारे देश के निर्वाचन-मौसम ने पिछले एक दशक में एक ही पल में माशा से तोला हो जाने की तासीर अपना ली है। इन तीन राज्यों की विधानसभाओं के लिए हुए चुनाव प्रचार में निषेधात्मक भाषा के इस्तेमाल की विलक्षण मिसालें देखने को मिलीं। ख़ासकर असम में। वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने अपनी ज़ुबान से तो विपक्ष के लिए जो कहा सो कहा ही, अपनी असंस्कृत देह-भंगिमाओं के प्रदर्शन से सार्वजनिक जीवन में भोंडेपन की तमाम हदें पार कर दीं।

लेकिन बावजूद इस के सियासत के रहनुमाओं ने अपने भीतर की कुत्सितता को बाहर लाने से कोई गुरेज़ नहीं किया, इन तीनों प्रदेशों के मतदाताओं ने अपनी कर्तव्यबद्धता का बेहद सकारात्मक उदाहरण पेश किया। वे भरभरा कर मतदान केंद्रों तक पहुंचे और जम कर रायशुमारी में शिरकत की। महिलाओं ने इस मामले में पुरुषों को काफी पीछे छोड़ा और आज़ादी के बाद सब से ज़्यादा मतदान का कीर्तिमान बना। जम्हूरियत के गहरे क्षरण के इस दौर में इस दीये की टिमटिमाहट ने आगत के आसार उजले किए हैं।

असम, केरल और पुडुचेरी के चुनाव नतीजों के संकेत मतदान के बाद तक़रीबन साफ हो गए हैं। असम की 126 सीटों में से 9 अनुसूचित जातियों और 19 अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित हैं। वहां के ढाई करोड़ मतदाताओं में महिलाओं और पुरुषों की तादाद करीब बराबर-बराबर है। 2021 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी असम में 60 सीटें जीती थी। उसे सवा 33 प्रतिषत वोट मिला था। कांग्रेस 29 सीटें जीती थी और उसे पौने 30 प्रतिषत वोट मिला था। एआईयूडीएफ 16 सीटें जीती थी। उसे सवा 9 प्रतिषत वोट मिला था। जब 2024 के लोकसभा चुनाव हुए तो असम में भाजपा को 75 विधानसभा सीटों पर बढ़त मिली। यानी उस की स्थिति में सुधार हुआ और वह पिछले विधानसभा चुनाव के मुकाबले 15 अतिरिक्त सीटें जीत सकने की पायदान पर खड़ी नज़र आने लगी। लोकसभा के चुनाव में भाजपा को असम में 40 प्रतिशत वोट मिले। यानी उस के वोट प्रतिशत में भी पौने 7 अंक का इज़ाफ़ा हुआ। मगर पिछले विधानसभा चुनाव से लोकसभा चुनाव तक के बीच कांग्रेस का वोट प्रतिशत भाजपा से ज़्यादा बढ़ा है। उस के प्रतिशत में 10 अंक की बढ़ोतरी हुई है। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 40 प्रतिशत वोट मिले। उसे 31 सीटों पर बढ़त मिली। पहले से 2 ज़्यादा।

तो यह बीजगणित तो कहता है कि असम में इस बार भाजपा कोई सरपट नहीं दौड़ रही है। कांग्रेस से उस का मुकाबला बराबर की टक्कर का है। हिमंत बिस्वा सरमा की लोकप्रियता-लकीर इस बीच इसलिए बहुत तेज़ी से नीचे लुढ़की है कि चुनाव अभियान के दौरान उन की हताशाजनित अहंकारी जुमलेबाज़ी को लोगों ने आमतौर पर नापसंद किया है। भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शीर्ष नेतृत्व को भी उन के रवैए ने असहज किया है। इसलिए मुझे लगता है कि

अगर किसी न किसी तरह भाजपा की सरकार असम में बन भी गई तो वहां मुख्यमंत्री का चेहरा बदल जाएगा।

केरल की 140 सीटों में से 14 अनुसूचित जातियों और 2 अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित हैं। वहां के कुल पौने तीन करोड़ मतदाताओं में महिलाओं की संख्या पुरुशों से ज़्यादा है। पुरुष 1 करोड़ 30 लाख हैं तो महिलाएं 1 करोड़ 40 लाख। 2021 के चुनाव में वाम दलों की अगुआई वाली एलडीएफ 99 सीटें जीती थी और उसे सवा 45 प्रतिषत वोट मिले थे। कांग्रेस की अगुआई वाली यूडीएफ 41 सीटें जीती थी और उसे साढ़े 39 प्रतिषत वोट मिले थे। भाजपा एक भी सीट नहीं जीती, मगर वह सवा 11 प्रतिशत वोट मिले ले गई थी। कांग्रेस ने 21 सीटें जीती थी और उसे 25 प्रतिषत वोट मिले थे।

मगर 2024 के लोकसभा चुनाव में इस दृश्य का शीर्षासन हो गया। एलडीएफ के राजनीतिक दलों को सिर्फ़ 18 विधानसभा सीटों पर बढ़त मिली थी और साढ़े 33 प्रतिशत वोट मिले। यूडीएफ के राजनीतिक दलों को 111 विधानसभा सीटों पर बढ़त मिली और साढ़े 45 प्रतिशत वोट मिले। भाजपा को भी 11 विधानसभा क्षेत्रों में बढ़त मिली और पौने 17 प्रतिशत वोट मिले। कांग्रेस को अकेले 84 सीटों पर बढ़त मिली और सवा 35 प्रतिशत वोट मिले। यानी एलडीएफ को 81 सीटों और 12 प्रतिशत वोट का भारी-भरकम नुक़सान हुआ। यूडीएफ को 70 सीटों और साढ़े 6 प्रतिशत वोट का बेहद अच्छा-ख़ासा फ़ायदा हुआ। कांग्रेस को अकेले 63 सीटों और सवा 10 प्रतिशत वोट का फ़ायदा हुआ। भाजपा के भी साढ़े 5 प्रतिषत वोट बढ़े।यह परिदृश्य केरल में इस बार कांग्रेस की अगुआई वाली यूडीएफ के आसानी से सरकार में आने का संकेत दे रहा है। एलडीएफ अपने सायोनारा-सफ़र पर जाती दिखाई दे रही है और हो सकता है कि भाजपा एकाध सीट के साथ केरल की विधानसभा में पहली बार अपनी उपस्थिति दर्ज करा दे। मेरा आकलन है कि केरल में कांग्रेस को कम से कम 46 सीटें मिलेंगी और यूडीएफ न्यूनतम 75 का आंकड़ा छुएगी।

पुडुचेरी के 30 विधानसभा क्षेत्रों में से 5 अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित हैं। वहां के कुल साढ़े 9 लाख मतदाताओं में भी महिलाओं की तादाद पुरुषों से ज़्यादा है। महिलाएं पांच लाख हैं और पुरुष साढ़े चार लाख। 2021 के चुनाव में एन. रंगास्वामी की पार्टी को 10 सीटें और 26 प्रतिशत वोट मिले थे। भाजपा को 6 सीटें और पौने 14 प्रतिशत वोट मिले थे। डीएमके ने 6 सीटें और साढ़े 18 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। कांग्रेस को पौने 16 प्रतिशत मतों के साथ 2 सीटें मिली थीं। 6 सीटें और सवा 26 प्रतिशत वोट अन्य राजनीतिक दलों की झोली में गए थे। पुडुचेरी का दृश्य इस बार भी कुहासे से सराबोर है। छिटपुट राजनीतिक दलों से जीत कर आने वाले विधायक तय करेंगे कि वहां की सरकार का रंग क्या होगा।

अगले बारह से अठारह दिनों के बीच पश्चिम बंगाल के 294 और तमिलनाडु के 234 विधानसभा क्षेत्रों में भी मतदान होगा। इन 528 सीटों पर निष्पक्ष और निडर मतदान कराने के लिए हमारे यशस्वी और और पराक्रमी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी, लौहपुरुष-द्वितीय अमित भाई शाह और आईन-पसंद मुख्य निर्वाचन आयुक्त दिन-रात हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। वहां के ज़मीनी हालात तो ममता बनर्जी और एम. के. स्टालिन का ही ध्वजारोहण ही कर रहे हैं, मगर अमृतकाल में बारह-पंद्रह दिन बाद की मुस्तक़बिल-शिनासी करना बुद्धिमानी नहीं माना जाता है। सो, बावजूद इस के कि मै पूरी तरह मुतमइन हूं कि पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में कोई रद्दोबदल नहीं होने वाला है, मगर वहां मतदान संपन्न हो जाने दीजिए, तभी मैं आप को बता पाऊंगा कि इन दोनों प्रदेशों की टोपियों से कूद कर बाहर आने वाले खरगोशों का रंग मौलिक रह पाया है या रंगरेज़ अपना कमाल दिखाने में कामयाब हो गए हैं।

-पंकज शर्मा

बेशर्मी-झूठ में ट्रंप, मोदी भाई-भाई!

अमेरिका आज मजाक है! राष्ट्रपति ट्रंप लंगूर के हाथ में उस्तरे जैसी लोकोक्तियों के पर्याय हैं! अमेरिकी इतिहास में पहली बार है कि 'ग्रेट अमेरिका' अकेला, अलग-थलग है! जबकि ट्रंप का दो टूक ऐलान है कि अमेरिका जीता! ईरान खत्म! ईरान की सेना, नौसेना, वायुसेना, लीडरशिप सब खत्म। वही दुनिया का आंखों देखा सत्य क्या है? ईरान ढीठ है, साबुत है। होर्मुज़ को खतरे की खाड़ी बना कर तेल-गैस जहाजों की आवाजाही को रोका है। विश्व अर्थिकी हिली हुई है। खाड़ी के उन अरब देशों में त्राहिमाम है, जिन्होंने अमेरिकी सैनिक छतरी के नीचे पेट्रोडॉलर की चकाचौंध का वैश्विक घमंड बनाया हुआ था। हर कोई अमेरिका से तौबा कर रहा है। अमेरिकी ढाल से ईरानी मिसाइल, ड्रोन रुके नहीं। मगर ट्रंप का सत्य से क्या लेना! न चुप रहेंगे और न सच्चाई मानेंगे। वे विजय की वैसी ही डुगडुगी बजाए हुए हैं जैसे पिछले साल मई में भारत में प्रधानमंत्री मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर का नगाड़ा बजाया था। मतलब भारत ने पाकिस्तान को ठोंक डाला! भारत जीता! दुनिया ने भारत का लोहा माना!

तुलना करें ट्रंप के ईरान को मजा चखाने के हवाई ऑपरेशन और मई 2025 के मोदी के ऑपरेशन सिंदूर के समय को! आकार, अवधि का फर्क है अन्यथा सवाल है जैसे अमेरिका ने क्या पाया

तो भारत ने क्या पाया? क्या ऑपरेशन सिंदूर से आतंक पोषक पाकिस्तान पस्त हुआ? आतंक के असल सूत्रधार आईएसआई का मुख्यालय क्या तबाह हुआ? पहलगाम की आतंकी घटना से ठीक पहले कश्मीर का राग आलापने वाले जनरल मुनीर की लीडरशिप क्या ध्वस्त हुई? क्या पाकिस्तान हारा, पीटा, ध्वस्त और वैश्विक अछूत बना? उलटे पूरी दुनिया में अलग नैरेटिव था। भारत की साख, उसकी सैन्य ताकत पर सवाल उठे! मगर भारत और अमेरिका का एक बेसिक फर्क है। अमेरिका में भक्तों की ताकत के बावजूद ट्रंप लगभग अकेले, बेसुरे हैं। उनका उप राष्ट्रपति, विदेश मंत्री, कैबिनेट से लेकर रिपब्लिकन पार्टी के नेता, सांसद, मीडिया, फॉक्स न्यूज़ जैसे भक्त चैनल भी ट्रंप के सुर में सुर नहीं मिला रहे। गुरुवार रात-सुबह ट्रंप ने मजाक में कहा जेडी वेंस (उप राष्ट्रपति) अलग राय रखता है तो मैंने उसे कहा जाओ, करो बात। वह सफल होगा तो उसे क्रेडिट दूंगा, नहीं तो मैं क्रेडिट लूंगा!

यह है बुद्धि, सामूहिक, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की तासीर के अमेरिका बनाम भक्ति-लाठी की हवाबाजी के भारत का फर्क। सो, पैंसठ प्रतिशत अमेरिकियों ने ट्रंप के झूठ को खारिज किया हुआ है। हालांकि ट्रंप का विरोधियों के प्रति वही रुख है जो नरेंद्र मोदी का था। ट्रंप का भी रुख है, देखो मैं शूरवीर (छप्पन इंची छाती वाला), मैंने वह कर दिखाया, जिसकी 47 वर्षों में किसी की हिम्मत नहीं हुई। मैं हाथी (रिपब्लिकन पार्टी का प्रतीक) महान और देखो ये गधड़े (डेमोक्रेटिक पार्टी का प्रतीक) कह रहे हैं मैं झूठा! मगर अमेरिकी बहुसंख्या में ट्रंप को गधेड़ा करार दे रहे हैं! वही भारत में नरेंद्र मोदी के झूठ के नगाड़ों पर क्या था? मुर्दा कौम के लाठीधारी लोगों का मोदीजी की शान में यह पथसंचलन था कि जय मोदी हरे! मैं सेवक तुम स्वामी। तुम बिन और न दूजा। हम बढ़ जा रहे हैं विजयपथ की ओर! यही हम हिंदुओं का इतिहास है, नियति है। समय राजे-रजवाड़ों का हो या इक्कीसवीं सदी के पृथ्वीराज चौहान उर्फ नरेंद्र मोदी का। शस्त्रागार में सब है। भाला, तलवार, बंदूक, तोप, लड़ाकू जहाज, हवाई जहाज, परमाणु बम सब सजे हुए हैं। दशहरे के दिन उनकी पूजा भी होगी। लेकिन खैबर पार से पांच सौ घुड़सवार जब भी सोमनाथ मंदिर या दिल्ली के मुहाने पहुंचे तो हथियार धरे रह गए। बावजूद इसके राजा के शौर्य की कीर्ति चारणों की ऐसे ही स्तुति-गान (पृथ्वीराज रासो) से था कि हर, हर मोदी, घर-घर मोदी! झूठ, भक्ति अंतहीन है। खाड़ी के विकट संकट में भी झूठ कि हमारे यहां तो सब ठीक। मैंने पेट्रोल-डीजल के दाम नहीं बढ़ने दिए। सो, हिंदुओं जागो, मुसलमान को हराओ, बंगाल जिताओ!

-हरिशंकर व्यास

विज्ञान के पार की संवेदना है 'प्रोजेक्ट हेल मैरी'!

यहां फ़िल्म किसी आदर्श नायक की छवि नहीं गढ़ती, बल्कि एक साधारण इंसान को दिखाती है, जो डरता है, हिचकिचाता है, पर अंततः सही निर्णय लेने की कोशिश करता है। अक्सर यह बहस होती है कि क्या तकनीक हमें अधिक मानवीय बना रही है या कम। 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' इस बहस को एक अलग दृष्टिकोण देती है। यह फ़िल्म दिखाती है कि तकनीक और मानवता एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। कभी-कभी सिनेमा हमें केवल मनोरंजन नहीं देता, बल्कि हमें हमारे समय, हमारी सीमाओं और हमारी संभावनाओं के बारे में सोचने के लिए विवश करता है। आज के सिने-सोहबत में एक ऐसी ही फ़िल्म 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' पर विमर्श करते हैं। 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' ऐसी ही एक फ़िल्म है जो अंतरिक्ष की असीम शून्यता में जाकर भी आख़िरकार मनुष्य के भीतर लौट आती है। यह विज्ञान कथा है, पर उतनी ही गहराई से यह संवेदना की कथा भी है; यह तकनीक की बात करती है, पर उतनी ही सादगी से दोस्ती और भरोसे की भी।'प्रोजेक्ट हेल मैरी' के निर्देशक हैं फिल लॉर्ड और क्रिस्टोफर मिलर, स्क्रीन राइटर हैं ड्रू गोडार्ड और सिनेमेटोग्राफर हैं ग्रेग फ्रेज़र। एंडी वियर के उपन्यास 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' पर आधारित यह फ़िल्म हमें उस जगह ले जाती है, जहां विज्ञान और भावनाएं एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक बन जाते हैं। यही इसकी सबसे बड़ी खूबसूरती है। यह हमें याद दिलाती है कि तकनीक जितनी भी उन्नत हो जाए, उसका अंतिम उद्देश्य मनुष्य को बचाना और बेहतर बनाना ही होता है।

फ़िल्म की शुरुआत एक बेहद सन्नाटे भरे क्षण से होती है। एक व्यक्ति (रायलैंड ग्रेस) अंतरिक्ष यान में जागता है। उसे कुछ याद नहीं। यह दृश्य केवल एक प्लॉट डिवाइस नहीं, बल्कि एक गहरा रूपक है। हम सभी अपने-अपने जीवन में कभी न कभी ऐसे ही जागते हैं, जहां हमें यह समझ नहीं आता कि हम यहां क्यों हैं, हमें क्या करना है, और हमारे सामने जो संकट है, उसका समाधान क्या है। जैसे-जैसे ग्रेस की स्मृतियां लौटती हैं, हम उसके साथ उस यात्रा में शामिल हो जाते हैं। यह यात्रा केवल एक मिशन की नहीं, बल्कि पहचान की भी है। वह केवल यह नहीं समझ रहा कि उसे पृथ्वी को कैसे बचाना है, बल्कि यह भी कि वह खुद कौन है, एक साधारण शिक्षक, या असाधारण परिस्थितियों में खड़ा एक नायक। यहां फ़िल्म एक महत्वपूर्ण बात कहती है, नायक जन्म से नहीं होते, परिस्थितियां उन्हें गढ़ती हैं। अक्सर विज्ञान आधारित फिल्मों में तकनीक एक चमत्कार की तरह प्रस्तुत की जाती है, कुछ ऐसा जो आम दर्शक को चकित तो करता है, पर उससे जुड़ने नहीं देता। लेकिन 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' इस परंपरा को तोड़ती है। यहां विज्ञान कोई रहस्य

नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया है। समस्या आती है, उसका विश्लेषण होता है, प्रयोग किए जाते हैं, असफलताएं मिलती हैं, और फिर धीरे-धीरे समाधान सामने आता है। यह पूरी प्रक्रिया इतनी मानवीय लगती है कि दर्शक खुद को उस प्रयोगशाला का हिस्सा महसूस करने लगता है और शायद यही वजह है कि फ़िल्म का विज्ञान हमें डराता नहीं, बल्कि हमें जिज्ञासु बनाता है। यह फ़िल्म हमें यह भी सिखाती है कि तकनीक का सबसे बड़ा गुण उसकी जटिलता नहीं, बल्कि उसकी उपयोगिता है वह कितनी आसानी से जीवन को समझने और सुधारने में हमारी मदद करती है। जहां विज्ञान फ़िल्म का ढांचा बनाता है, वहीं भावनाएं उसकी आत्मा हैं। रायलैंड ग्रेस का अकेलापन केवल भौतिक नहीं है। यह मानसिक और भावनात्मक भी है। अंतरिक्ष की अनंतता में तैरता हुआ एक इंसान, यह दृश्य जितना भव्य है, उतना ही भीतर से खाली भी लेकिन फ़िल्म यहीं रुकती नहीं। यह हमें धीरे-धीरे उस बिंदु तक ले जाती है जहां यह अकेलापन एक रिश्ते में बदल जाता है, रॉकी के साथ। रॉकी (एक एलियन प्राणी) इस फ़िल्म का सबसे अनोखा और भावनात्मक पहलू है। यह रिश्ता किसी भी पारंपरिक दोस्ती जैसा नहीं है। यहां भाषा नहीं है, साझा इतिहास नहीं है, यहां तक कि जैविक संरचना भी पूरी तरह अलग है। फिर भी, इनके बीच जो संबंध बनता है, वह बेहद स्वाभाविक और गहरा है। यह दोस्ती हमें यह सिखाती है कि संबंधों की नींव समानताओं पर नहीं, बल्कि समझ और सहयोग पर टिकी होती है। जब दो प्राणी एक-दूसरे को समझने का प्रयास करते हैं, तो वे अपनी सीमाओं से परे जाकर जुड़ते हैं। रॉकी और ग्रेस के बीच के दृश्य फ़िल्म के सबसे जीवंत और टचिंग मोमेंट्स हैं। उनमें एक मासूमियत है, एक जिज्ञासा है, और सबसे बढ़कर एक भरोसा है। यहां तकनीक एक सेतु बनती है, एक ऐसी भाषा बनाने का माध्यम, जो दोनों को जोड़ सके। यह बेहद सुंदर विचार है कि तकनीक केवल मशीनों के लिए नहीं, बल्कि संबंधों को संभव बनाने के लिए भी होती है। फ़िल्म का एक और गहरा पक्ष है, नैतिक निर्णय। रायलैंड ग्रेस को बार-बार ऐसे निर्णय लेने पड़ते हैं जहां उसे यह तय करना होता है कि वह अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता दे या एक बड़े उद्देश्य को। ये फ़ैसला आसान नहीं हैं, और फ़िल्म इन्हें सरल बनाने की कोशिश भी नहीं करती। यही इसकी ईमानदारी है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि अगर हम उस स्थिति में होते, तो क्या करते? क्या हम भी वही साहस दिखा पाते? यहां फ़िल्म किसी आदर्श नायक की छवि नहीं गढ़ती, बल्कि एक साधारण इंसान को दिखाती है, जो डरता है, हिचकिचाता है, पर अंततः सही निर्णय लेने की कोशिश करता है। अक्सर यह बहस होती है कि क्या तकनीक हमें अधिक मानवीय बना रही है या कम। 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' इस बहस को एक अलग दृष्टिकोण देती है। यह फ़िल्म दिखाती है कि तकनीक और मानवता एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। बल्कि, जब तकनीक का उपयोग संवेदनशीलता के साथ किया जाता है, तो वह मानवता को और गहरा बना देती है। ग्रेस और रॉकी के बीच संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। यह केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि एक भावनात्मक उपलब्धि भी है। फ़िल्म का दृश्य संसार अत्यंत प्रभावशाली है। अंतरिक्ष की विशालता को जिस तरह से दिखाया गया है, वह दर्शकों को चकित करता है, लेकिन कहीं भी यह भव्यता कहानी पर हावी नहीं होती। कैमरा अक्सर ठहरता है, जैसे वह दर्शक को समय देना चाहता हो कि वह उस क्षण को महसूस करे। साउंड डिज़ाइन भी इसी दर्शन का अनुसरण करता है। खामोशी यहां केवल अनुपस्थिति नहीं, बल्कि एक सक्रिय तत्व है जो अकेलेपन और तनाव को और गहरा करती है। 'द मार्शियन' का ज़िक्र 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' के संदर्भ में बार-बार इसलिए आता है, क्योंकि दोनों एक ही लेखक 'एंडी वियर' की रचनाएं हैं और उनकी कहानी कहने की शैली में एक स्पष्ट समानता दिखाई देती है। 'द मार्शियन' में मार्क वॉटनी मंगल ग्रह पर अकेले फंस जाता है और विज्ञान के सहारे जीवित रहने की कोशिश करता है। वहीं 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' में रायलैंड ग्रेस अंतरिक्ष में अकेला है और उसे पूरी मानवता को बचाने का दायित्व मिला है। दोनों कहानियों का मूल प्रश्न एक जैसा है कि जब आप पूरी तरह अकेले हों, तो आप अपने ज्ञान और साहस से कितनी दूर जा सकते हैं? दोनों फ़िल्मों में कोई पारंपरिक एक्शन हीरो नहीं है। नायक का सबसे बड़ा हथियार है उसकी वैज्ञानिक समझ। 'द मार्शियन' में आलू उगाना, ऑक्सीजन बनाना, छोटे-छोटे वैज्ञानिक समाधान ही जीवन बचाते हैं। 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' में भी हर संकट का समाधान प्रयोग और तर्क से आता है। यानी, यहां विज्ञान ही असली नायक है। दोनों कहानियां गंभीर परिस्थितियों में भी हल्का-फुल्का हास्य बनाए रखती हैं। मार्क वॉटनी की डायरी एंट्रीज़ हों या रायलैंड ग्रेस की घबराहट भरी मज़ाकिया प्रतिक्रियाएं, ये पात्र हमें यह महसूस कराते हैं कि वे सुपर हीरो नहीं, बल्कि हमारे जैसे ही इंसान हैं। 'द मार्शियन' ने रास्ता बनाया, और 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' उस रास्ते को ब्रह्मांड तक ले जाती है। जहां 'द मार्शियन' में संघर्ष मुख्यतः भौतिक था, जीवित रहने का, वहीं 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' में संघर्ष भावनात्मक और दार्शनिक भी है। यह केवल यह नहीं पूछती कि 'हम कैसे बचेंगे'?, बल्कि यह भी पूछती है कि 'हम क्यों बचना चाहते हैं'? और 'हम किसके लिए बचना चाहते हैं'? फ़िल्म का शुरुआती भाग थोड़ा धीमा लग सकता है, विशेषकर उन दर्शकों के लिए जो तेज़-रफ्तार नैरेटिव के आदी हैं लेकिन यह धीमापन आवश्यक है। यह हमें पात्र के भीतर उतरने का समय देता है। यह हमें उसके डर, उसकी उलझन और उसकी जिज्ञासा को महसूस करने का अवसर देता है और जब कहानी गति पकड़ती है, तो यह निवेश पूरी तरह सार्थक हो जाता है। रोजेक्ट हेल मैरी' केवल एक फ़िल्म नहीं, बल्कि एक विचार है। एक ऐसा विचार जो हमें यह याद दिलाता है कि हम चाहे कितनी भी दूर क्यों न चले जाएं, हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारी मानवीयता ही है। यह फ़िल्म हमें सिखाती है कि ज्ञान आवश्यक है, पर संवेदना अनिवार्य है। 'तकनीक' शक्तिशाली है, पर 'संबंध' उससे भी अधिक। और सबसे बढ़कर, हम तब तक अकेले नहीं है', जब तक हम जुड़ने की कोशिश करते रहते हैं। अपने जीवन की भागदौड़ में, जहां हम अक्सर तकनीक के बीच घिरे रहते हैं, यह फ़िल्म हमें एक क्षण रुककर यह सोचने का अवसर देती है कि क्या हम उस तकनीक का उपयोग केवल सुविधा के लिए कर रहे हैं, या उससे कुछ अधिक मानवीय बनाने के लिए? शायद यही 'प्रोजेक्ट हेल मैरी' का सबसे बड़ा प्रभाव है कि यह हमें अंतरिक्ष की ओर नहीं, बल्कि अपने भीतर झांकने के लिए प्रेरित करती है। नज़दीकी सिनेमाघरों में है। देख लीजिएगा।

-पंकज दुबे

ट्रंप की धमकियां दरकिनार, होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों से 2 मिलियन डॉलर लेगा ईरान, रोज 10 टैंकरों को मिलेगा परमिट

एजेंसी तेहरान

ईरान ने कथित तौर पर होर्मुज जलडमरूमध्य से हर दिन 10 जहाजों को गुजरने की अनुमति देने का फैसला लिया है। इसके लिए ईरान ने एक जहाज से दो मिलियन डॉलर की फीस तय की है। ईरान ने यह भी तय किया है कि हर दिन होर्मुज स्ट्रेट से दस (एक दर्जन से ज्यादा नहीं) जहाजों को निकाला जाएगा। होर्मुज स्ट्रेट पर ईरान का यह फैसला ऐसे समय सामने आया है, जब उसकी अमेरिका के साथ सीजफायर समझौते पर बातचीत बेनतीजा रही है। होर्मुज स्ट्रेट ईरान और अमेरिका के बीच तनाव का एक अहम बिंदु बना हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बार-बार होर्मुज खोलने के लिए ईरान को धमकियां दी हैं लेकिन तेहरान इससे दबाव में आता नहीं दिखा है। वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान की योजना है कि होर्मुज स्ट्रेट जलडमरूमध्य से गुजरने वाले हर सुपरटैंकर से ली जाने वाली फीस 20 लाख डॉलर रखी जाए। फिलहाल कई देशों के जहाजों की ओर से होर्मुज से गुजरने के लिए इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) से संपर्क किया गया है। वॉल स्ट्रीट जर्नल का दावा है कि ईरान इस जलडमरूमध्य को पार करने वाले जहाजों के लिए एक विशेष व्यवस्था बनाएगा। इसके तहत उनको ईरान से परमिट लेना होगा। इस परमिट के बाद वह ईरानी सेना की ओर से तय किए गए रास्तों से गुजर सकेंगे। बीते हफ्ते सीजफायर के बाद ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने होर्मुज खोलने की बात की थी।

दुनियाभर के लिए अहम समुद्री रूट होर्मुज स्ट्रेट बीते छह हफ्तों से चर्चा में है। अमेरिका और इजरायल के 28 फरवरी को किए गए हमलों के जवाब में ईरान ने इस समुद्री गलियारों को अपने नियंत्रण में ले लिया है। ईरान इस रूट से चुनिंदा जहाजों को ही गुजरने दे रहा है। अब ईरान ने अब इस पर अपना नियंत्रण स्थायी करते हुए होर्मुज में टोल लेने की बात कही है। अमेरिका-इजरायल गठबंधन और ईरान के बीच छह हफ्ते चले युद्ध के बाद 8 अप्रैल को सीजफायर हुआ है। इसके बाद पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में अमेरिका और ईरान के डेलीगेशन ने बातचीत की है। शनिवार शाम शुरू हुई यह बातचीत 21 घंटे तक चली लेकिन बेनतीजा खत्म हो गई।

इस्लामाबाद में ईरान और अमेरिका की बातचीत फेल होने के पीछे भी होर्मुज स्ट्रेट को एक अहम कारण माना जा रहा है। पाकिस्तान की मध्यस्थता में हुई बातचीत में ईरान और अमेरिका अपने-अपने पक्ष पर अड़े रहे। अमेरिका चाहता था कि होर्मुज को खोल दिया जाए लेकिन ईरान ने इससे इनकार कर दिया।

`दागो और भूल जाओ', दुश्मनों के सैकड़ों टैंक पल भर में सर्वनाश; भारत की `ध्रुवास्त्र मिसाइल' मचाएगी तबाही

एजेंसी नई दिल्ली

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारतीय सेना पूरी तरह से खुद को आक्रामक बनाने पर जुट गई है। इसी क्रम में अब एक ऐसी मिसाइल को बेड़े में शामिल किया जा रहा है जो कि दुश्मनों के टैंक को पल भर में तबाह कर देगा। जी हां इस मिसाइल का नाम है ध्रुवास्त्र मिसाइल जिसे की हेलीकॉप्टर से लॉन्च किया जाएगा और यह दुश्मनों के टैंक को झटके में सर्वनाश कर देगी। बता दें कि पहले इसे हेलिना (हेलीकॉप्टर-लॉन्च्ड नाग) के नाम से जाना जाता था। अब इसे डीआरडीओ द्वारा डेवलप कर भारतीय सशस्त्र बलों के लिए बख्तरबंद वाहनों के खिलाफ युद्ध में, विशेष रूप से काफी ऊंचाई वाले और विवादित क्षेत्रों में, निर्णायक बढ़त प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। ध्रुवास्त्र पुरानी दूसरी पीढ़ी की एटीजीएम से एक महत्वपूर्ण छलांग है, जो भारत को स्वदेशी तीसरी पीढ़ी की टैंक रोधी मिसाइल प्रणालियों वाले चुनिंदा देशों के समूह में शामिल करती है।ध्रुवास्त्र मिसाइल की मुख्य खासियतें दागो और भूल जाओः यह मिसाइल एक बार लक्ष्य पर लॉक होने के बाद, अपने आप दुश्मन का पीछा कर उसे नष्ट कर देती है। खतरनाक मारक क्षमताः ध्रुवास्त्र मिसाइल की मारक रेंज लगभग 500 मीटर से 7 किलोमीटर तक है। हेलीकॉप्टर से अटैकः यह ध्रुवास्त्र मिसाइल ऊंचाई पर जाकर टैंकों के कमजोर ऊपरी हिस्से पर हमला करती है, जिससे वे पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। इमेजिंग इन्फ्रारेड सीकरः इस मिसाइल में लगा उन्नत इमेजिंग इन्फ्रारेड सीकर रात के अंधेरे और खराब मौसम में भी दुश्मन के टैंकों पर अटैक कर सकता है। हेलिकॉप्टर से आक्रामक लॉन्चिंगः इसे एचएएल रुद्र और लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर जैसे हमलावर हेलिकॉप्टरों से दागा जा सकता है। पल भर में नष्ट करने की क्षमताः यह 800 मिलीमीटर से अधिक मोटी स्टील प्लेट को पल भर में भेदने में सक्षम है। ध्रुवस्त्र मिसाइल, भारत के एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक, व्यापक नाग मिसाइल प्रणाली का हिस्सा है। नाग मिसाइल की परिकल्पना 1980 के दशक में ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में की गई थी। इसका उद्देश्य एक आधुनिक, सर्व-मौसम-कुशल, उच्च स्तरीय आक्रमण क्षमता वाली टैंक-रोधी प्रणाली विकसित करना था। वर्षों से, इसके कई संस्करण सामने आए हैं - जिनमें भूमि-आधारित नाग, नामिका (नाग मिसाइल वाहक), मानव-पोर्टेबल एटीजीएम (एमपीएटीजीएम) शामिल हैं। ध्रुवास्त्र इस प्रणाली का वायु-प्रक्षेपण संस्करण है, जिसे एचएएल रुद्र और एचएएल प्रचंड जैसे आक्रमणकारी हेलीकॉप्टरों से तैनाती के लिए अनुकूलित किया गया है। ये दोनों हेलीकॉप्टर हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा निर्मित किया गया है जो कि मिसाइल की लॉन्चिंग के लिए परफेक्ट है।

अरुणाचल प्रदेश पर चीन का नया Propaganda War, भारत बोला- मनगढ़ंत दावों से हकीकत नहीं बदलती

एजेंसी नई दिल्ली

भारत और चीन के बीच सीमा को लेकर बयानबाजी तेज होती नजर आई है। इस बार मामला अरुणाचल प्रदेश में जगहों के नाम बदलने को लेकर उठा है, जिस पर भारत ने सख्त प्रतिक्रिया दी और साफ शब्दों में इसे खारिज कर दिया।

मौजूद जानकारी के अनुसार, चीन की तरफ से अरुणाचल प्रदेश के कुछ इलाकों को नए नाम देने की कोशिश की गई, जिस पर विदेश मंत्रालय ने इसे "शरारतपूर्ण प्रयास" बताते हुए कहा कि इस तरह की मनगढ़ंत बातें जमीनी हकीकत को नहीं बदल सकती हैं। मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने कहा कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न हिस्सा रहा है, है और आगे भी रहेगा, इस पर कोई विवाद नहीं है।

बता दें कि चीन पहले भी कई बार इस तरह के नामकरण की कवायद कर चुका है, खासकर तब जब दोनों देशों के बीच कूटनीतिक तनाव बढ़ा हो। गौरतलब है कि साल 2017, 2021, 2023 और 2024 में भी चीन ने इसी तरह के कदम उठाए थे, जिनका भारत ने हर बार विरोध किया है। मौजूदा घटनाक्रम ऐसे समय पर सामने आया है जब दोनों देशों के बीच संबंधों को सामान्य करने की कोशिशें चल रही हैं। विदेश मंत्रालय ने यह भी कहा कि इस तरह के कदम द्विपक्षीय संबंधों को सुधारने की कोशिशों को कमजोर करते हैं और माहौल में नकारात्मकता लाते हैं। गौरतलब है कि सीमा विवाद खासकर लद्दाख क्षेत्र में लंबे समय से दोनों देशों के बीच तनाव का कारण बना हुआ है। इसी बीच चीन की तरफ से शिनजियांग क्षेत्र में नए प्रशासनिक बदलाव की खबरें भी सामने आई हैं, जहां "सेनलिंग" नाम का नया काउंटी बनाया गया है। यह इलाका अफगानिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के पास स्थित है, जिससे इसका सामरिक महत्व और बढ़ जाता है। जानकारों का मानना है कि चीन इस तरह के कदमों के जरिए अपने दावे को मजबूत करने की रणनीति अपनाता रहा है, जिसे कूटनीतिक दबाव बनाने की कोशिश के तौर पर भी देखा जाता है। हालांकि भारत का रुख इस मामले में हमेशा स्पष्ट रहा है और वह किसी भी तरह के ऐसे दावों को स्वीकार करने से इंकार करता रहा है।

बलूचिस्तान में पहली बार समुद्र तक पहुंची लड़ाई, ग्वादर के पास पाकिस्तानी नेवी का जहाज उड़ाया, बुरे फंसे मुनीर-शहबाज

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान की नेवी के एक जहाज पर अरब सागर में हमला हुआ है। इसमें कम से कम तीन पाकिस्तानी नौसेना कर्मियों की मौत हुई है। बलूचिस्तान पोस्ट ने बताया है कि रविवार को जिवानी खाड़ी के पास पाकिस्तान के एक नौसैनिक जहाज को निशाना बनाकर उड़ा दिया गया। इस हमले ने ध्यान खींचा है क्योंकि क्योंकि यह पहली बार है, जब बलूचिस्तान के पास के समुद्री क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना को निशाना बनाया गया है। पाकिस्तानी आर्मी और सरकार के लिए यह खासतौर से चिंता बढ़ाने वाला है क्योंकि अटैक रणनीतिक लिहाज से महत्वपूर्ण ग्वादर पोर्ट के पास हुआ है स्थानीय मीडिया के अनुसार, ग्वादर के पास समुद्र में पाकिस्तान नौसेना की एक नाव पर हमला हुआ। खुले समुद्र में इस तरह की घटना पहली बार हुई है। इसमें पाकिस्तानी नौसेना के तीन जवान मारे गए हैं। अब तक किसी भी समूह ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। स्थानीय एक्सपर्ट मान रहे हैं कि इसके पीछे बलूचिस्तान में सक्रिय विद्रोही गुट हो सकते हैं, जिन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह छेड़ रखा है। ईरान में युद्ध और होर्मुज स्ट्रेट में रुकावट की वजह से पूरे क्षेत्र में समुद्री यातायात प्रभावित है। ऐसे में पाकिस्तान के बंदरगाहों पर कई देशों के बड़े जहाज और कंटेनर लंगर डाल रहे हैं। होर्मुज जलडमरूमध्य में जोखिम के चलते यह क्षेत्र वैकल्पिक केंद्र के रूप में उभरा है। ऐसे समय में पाकिस्तानी समुद्री क्षेत्र के भीतर हुए इस हमले से विदेशी नाविकों के बीच डर और चिंता बढ़ सकती है। बलूचिस्तान के पास पाकिस्तानी नेवी पर हमला आर्मी चीफ असीम मुनीर और शहबाज शरीफ की चिंता को बढ़ाता है। इससे पाकिस्तान के सामने समुद्र की सुरक्षा को बेहतर करने की बड़ी चुनौती सामने आ गई है। इस पूरे क्षेत्र में जमीन पर पहले ही पाकिस्तान की आर्मी पहले ही बीएलए, टीटीपी और दूसरे गुटों के हमलों का सामना कर रही है। पाकिस्तान का बलूचिस्तान प्रांत लंबे समय से हिंसा और अशांति का सामना कर रहा है। इस क्षेत्र में कई हथियारबंद गुट पाकिस्तानी आर्मी पर हमले करते रहे हैं। कई ऐसे इलाके हैं, जहां जाना भी पाकिस्तानी अफसरों और पुलिस के लिए संभव नहीं है। पाकिस्तान ने कई ऑपरेशन किए हैं लेकिन उसे बहुत ज्यादा कामयाबी नहीं मिली है। बलूचिस्तान में सक्रिय हथियारबंद गुटों का कहना है कि उनके प्रांत के संसाधनों को लूटा जा रहा है। इन गुटों का आरोप है कि बलूचिस्तान के संसाधनों का इस्तेमाल पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांत के लोग कर रहे हैं। ऐसे में वह बलूचिस्तान की आजादी की लड़ाई लड़ रहे है ताकि यहां के लोगों की स्थिति में सुधार हो सके।

शांति वार्ता फेल होते ही लेबनान पर बरसे इजरायल के बम, हवाई हमले में 6 की दर्दनाक मौत

एजेंसी तेहरान

अमेरिका और ईरान के बीच इस्लामाबाद में हुई शांति वार्ता के बेनतीजा खत्म होने के बाद इजरायल ने लेबनान पर अपने हमले और तेज कर दिए हैं। रविवार को दक्षिणी लेबनान के मारूब कस्बे में एक घर को निशाना बनाकर किए गए भीषण हमले में 6 लोगों की मौत हो गई।

लेबनान की सरकारी समाचार एजेंसी के अनुसार, इजरायली लड़ाकू विमानों ने मारूब कस्बे में एक आवासीय घर पर बमबारी की। इस हमले के समय घर में सात लोग मौजूद थे, जिनमें से 6 की जान चली गई। इजरायल ने यह हमला बिना किसी पूर्व चेतावनी के किया। हालांकि, इजरायली सेना का कहना है कि वे केवल हिजबुल्लाह के ठिकानों और लड़ाकों को निशाना बना रहे हैं, लेकिन आवासीय क्षेत्रों में हो रही बमबारी से नागरिक हताहत हो रहे हैं। गौरतलब है कि अमेरिका और ईरान के बीच दो हफ्ते के अस्थायी युद्धविराम की चर्चाओं के दौरान भी इजरायल ने अपनी कार्रवाई जारी रखी थी। हाल ही में इजरायल ने महज 10 मिनट के भीतर लेबनान के 100 से ज्यादा ठिकानों पर बमबारी की थी, जिसे 'ऑपरेशन इटरनल डार्कनेस' का नाम दिया गया। उस हमले में 200 से ज्यादा लोग मारे गए थे और करीब 2,000 लोग घायल हुए थे।

लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी हालिया आंकड़ों के अनुसार, 2 मार्च 2026 को युद्ध शुरू होने के बाद से अब तक इजरायली हमलों में 2,020 लोगों की मौत हो चुकी है। मृतकों में 248 महिलाएं, 165 बच्चे और 85 मेडिकल कर्मचारी शामिल हैं। इसके अलावा, अब तक 6,436 लोग घायल हुए हैं और लाखों लोग विस्थापित हो चुके हैं। इस्लामाबाद वार्ता के विफल होने के बाद अब इस बात की आशंका और बढ़ गई है कि इजरायल लेबनान में अपनी जमीनी और हवाई कार्रवाई को और अधिक हिंसक बना सकता है।

`अमेरिका-ईरान में बातचीत ना होती तो दिखा देते औकात', एर्दोगन की इजरायल पर हमले की धमकी, निशाने पर नेतन्याहू

एजेंसी अंकारा

तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन ने इजरायल के खिलाफ आक्रामक बयानबाजी की है। एर्दोगन ने रविवार को एक बयान में इजरायल पर सैन्य हमले की धमकी दी है। उन्होंने कहा कि तुर्की उसी तरह इजरायल में सैन्य हस्तक्षेप कर सकता है, जैसा पूर्व में लीबिया और नागोर्नो-काराबाख में वह कर चुका है। एर्दोगन के बयान से तुर्की-इजरायल में तनाव बढ़ सकता है। दोनों देशों का रिश्ता पहले ही काफी ज्यादा तनातनी का रहा है। इजरायली वेबसाइट वायनेट की रिपोर्ट के मुताबिक, एर्दोगन ने एक भाषण के दौरान कहा कि जिस तरह हम लीबिया और काराबाख में घुसे थे, उसी तरह हम इजरायल में घुस सकते हैं। तुर्की ऐसा कर सकता है। तुर्की के पास ऐसा ना करने का कोई कारण नहीं है। इसके लिए ताकत और एकता की जरूरत है, जो हमारे पास है। एर्दोगन का कमेंट अमेरिका और ईरान के बीच इस्लामाबाद में चली 21 घंटे की बेनतीजा बातचीत के बीच आया है। एर्दोगन ने संकेत दिया कि अगर बातचीत नहीं चल रही होती तो तुर्की शायद कोई कार्रवाई कर चुका होता। उन्होंने कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच पाकिस्तान मध्यस्थता नहीं करता तो हम इजरायल को उसकी औकात दिखा देते। तुर्की राष्ट्रपति ने इजरायल पर लेबनान में संघर्ष-विराम तोड़ने और हवाई हमले करते हुए सैकड़ों बेगुनाहों को मारने का आरोप लगाया। एर्दोगन ने कहा कि इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू गाजा से लेकर लेबनान तक युद्ध अपराध कर रहे हैं। नेतन्याहू खून और नफरत में अंधे हो चुके हैं। वह जो कर रहे हैं, उसको अनदेखा नहीं किया जा सकता है। तुर्की नेताओं की ओर से इजरायल के खिलाफ सैन्य कार्रवाई की धमकी आती रही है। एर्दोगन खासतौर से गाजा में हमलों के बाद आक्रामक दिखे हैं। जुलाई 2024 में एर्दोगन ने तुर्की के शहर राइज में इजरायल को धमकाया था। इजरायली सेना को उन्होंने गाजावासियों के खून का प्यासा कहा था। अप्रैल 2025 में एक वरिष्ठ तुर्की टिप्पणीकार ने टेलीविजन पर बैठकर दावा किया था कि तुर्की की सेना 72 घंटों के भीतर इजरायल की राजधानी तेल अवीव तक पहुंच सकती है। उन्होंने नेतन्याहू की तुलना एडॉल्फ हिटलर से करते हुए यरूशलम की आजादी के लिए एकजुटता का आह्वान किया था। तुर्की ने एर्दोगन के नेतृत्व में हालिया वर्षों में क्षेत्र में अपनी सैन्य मौजूदगी को बढ़ाना चाहा है। इसमें सीरिया, लीबिया और दक्षिण काकेशस में सैन्य अभियान शामिल हैं। इजरायल का रवैया वर्षों से लगातार विस्तारवादी रहा है। ऐसे में एर्दोगन और नेतन्याहू के बीच तीखी जुबानी जंग देखी जाती रही है।

ओवरटन ट्विन ब्रदर्स का डबल अटैक, एक का आईपीएल में गेंद से कहर तो दूसरे का काउंटी में शतक

एजेंसी नई दिल्ली

इंडियन प्रीमियर लीग 2026 इस वक्त भारत में चल रहा है। जहां इंग्लैंड के बॉलिंग ऑलराउंडर जेमी ओवरटन पांच बार की आईपीएल चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स के लिए खेल रहे हैं। जेमी ओवरटन ने बीते शनिवार को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ चेन्नई के एमए चिदंबरम स्टेडियम में शानदार गेंदबाजी की और सीएसके को सीजन का पहला मैच जिताने में अहम योगदान दिया। 32 साल के जेमी ओवरटन ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ एक या दो नहीं बल्कि चार विकेट लेकर तहलका मचाया। उन्होंने अपने चार ओवर के स्पेल में 4.60 की इकॉनमी से गेंदबाजी करते हुए सिर्फ 18 रन दिए और चार विकेट झटके। उन्होंने समीर रिजवी, डेविड मिलर, ट्रिस्टन स्ट्रब्स और आकिब नबी को आउट किया। ओवरटन ने दिल्ली को लक्ष्य तक न पहुंचने देने में बड़ा रोल निभाया। आपको बता दें कि जेमी ओवरटन के ट्विन ब्रदर क्रेग ओवरटन ने काउंटी क्रिकेट में बीते

शनिनार को शानदार बल्लेबाजी करते हुए शतक जड़ा। काउंटी चैंपियनशिप इंग्लैंड में शुरू हो गई है। क्रेग ओवरटन समरसेट के लिए खेलते हैं और उनकी कप्तान भी हैं।

इस वक्त समरसेट और एसेक्स के बीच काउंटी का मुकाबला खेला जा रहा है, जिसकी पहली पारी में बॉलिंग ऑलराउंडर क्रेग ओवरटन ने बल्लेबाजी में कमाल किया। उन्होंने कप्तानी पारी खेली।सातवें नंबर पर उतरे क्रेग ओवरटन ने 180 गेंद में 141 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में 19 चौके और तीन छक्के लगाए।

बता दें कि क्रेग ओवरटन और जेमी ओवरटन दोनों भाई इंग्लैंड के लिए भी खेल चुके हैं। क्रेग ओवरटन ने 2017 में इंग्लैंड के लिए डेब्यू किया था। जब से अब तक उन्होंने 8 टेस्ट और 7 वनडे मुकाबले खेले हैं। हालांकि, अब वह टीम का हिस्सा नहीं हैं। वहीं जेमी ओवरटन ने 2022 में इंग्लैंड के लिए टेस्ट तो 2024 में वनडे और टी20 में डेब्यू किया था। जेमी अब तक इंग्लैंड के लिए 2 टेस्ट, 13 वनडे और 24 टी20 खेल चुके हैं। जेमी टी20 वर्ल्ड कप 2026 में इंग्लैंड की टीम का हिस्सा भी थे। जेमी और क्रेग में से बड़े भाई क्रेग ओवरटन हैं। वह जेमी से तीन मिनट बड़े हैं।

टॉस के बाद ही क्यों झूम उठे शुभमन गिल, मैच जीतने जैसा जश्न मनाया

एजेंसी नई दिल्ली

आईपीएल 2026 में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ गुजरात टाइटंस का मुकाबला हो रहा है। सीजन के इस 19वें मैच में गुजरात के कप्तान शुभमन गिल ने टॉस जीता। उन्होंने लखनऊ की टीम को पहले बल्लेबाजी करने के लिए बुलाया। दोनों टीमों की टक्कर लखनऊ के भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी इकाना क्रिकेट स्टेडियम में खेला जा रहा है। इस सीजन गुजरात टाइटंस का यह चौथा मैच है। पहली बार टॉस का सिक्का शुभमन गिल के पक्ष में गिरा। टॉस के बाद गिल काफी खुश नजर आ रहे थे। उन्होंने इसका जमकर जश्न मनाया। गिल के जश्न को देखकर लग रहा था कि उन्होंने जैसे मैच

ही जीत लिया हो। टॉस जीतने के बाद जीटी के कप्तान शुभमन गिल ने कहा, 'हम पहले गेंदबाजी करेंगे। पिछले मैच में दो अंक मिलने से हमें काफी आत्मविश्वास मिला है। हम बेहतर क्रिकेट खेलना चाहते हैं और यह पक्का करना चाहते हैं कि मैच आखिरी ओवर तक न जाए। हमने बहुत अच्छा समय बिताया है। आईपीएल जैसे लंबे टूर्नामेंट में निरंतरता जरूरी है। 14 मैचों के बाद, सबसे निरंतर टीम ही टूर्नामेंट जीतेगी। हम पिछले मैच की प्लेइंग इलेवन के साथ खेल रहे हैं।' दोनों टीमें लय हासिल कर चुकी हैं एलएसजी की शुरुआत खराब रही थी और टीम को सीजन के पहले मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन इसके बाद लगातार 2 मैच जीतकर टीम 4 अंक के साथ आईपीएल 2026 के पॉइंट्स टेबल में पांचवें स्थान पर है। सीजन के अपने चौथे मैच में एलएसजी अपने जीत की लय को बरकरार रखने के लक्ष्य से उतरेगी। गुजरात टाइटंस ने 3 मैचों में 2 मैच गंवाए हैं और 1 जीत से 2 अंक लेकर अंकतालिका में सातवें स्थान पर है।

CSK ने दिल्ली को मात देकर दर्ज की पहली जीत, संजू सैमसन ने खेली बेहतरीन पारी

एजेंसी नई दिल्ली

आईपीएल 2026 के 18वें मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स ने एमए चिदंबरम क्रिकेट स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स को 23 रनों से हराया। ये सीएसके की इस सीजन की पहली जीत है। सीएसके से मिले 213 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए दिल्ली कैपिटल्स की पूरी 189 रन बनाकर ऑलआउट हुई। चेन्नई सुपर किंग्स से मिले 213 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स की शुरुआत अच्छी रही। केएल राहुल और पाथुम निसांका ने पहले विकेट के लिए मिलकर 4.6 ओवर में 61 रन जोड़े, राहुल 10 गेंदों में 18 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, निसांका ने 24 गेंदों में 5 चौकों और 2 छक्कों की मदद से 41 रन बनाए। हालांकि समीर रिजवी इस मुकाबले में फ्लॉप रहे वह महज 6 रन ही बना पाए और अपना विकेट गंवा बैठे। कप्तान अक्षर पटेल ने एक विकेट झटका। डेविड मिलर भी दिल्ली कैपिटल्स की नैया को पार नहीं लगा पाए वह महज 14 गेंदों में 17 रन ही बना पाए। आशुतोष शर्मा 10 गेंदों में19 रन बनाने के बाद नूर अहमद की गेंद पर अंशुल कंबोज को कैच देकर पवेलियन लौटे। ट्रिस्टन स्टब्स ने बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए 38

गेंदों पर 60 रनों की दमदार पारी खेली, लेकिन उन्हें दूसरे छोर से बाकी बल्लेबाजों का साथ नहीं मिल सका। आकिब 4 रन बनाकर आउट हुए। कुलदीप यादव 4 रन बनाकर अंशुल कंबोज का शिकार बने। चेन्नई सुपर किंग्स की तरफ से जेमी ओवरटन ने बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए 4 ओवर के स्पेल में सिर्फ 18 रन देकर 4 विकेट निकाले। वहीं, अंशुल कंबोज ने 3 विकेट चटकाए। चेन्नई ने 20 ओवर में 2 विकेट गंवाकर स्कोरबोर्ड पर 212 रन लगाए। संजू सैमसन और ऋतुराज गायकवाड़ की सलामी जोड़ी इस सीजन में पहली बार अच्छी लय में दिखाई दी। दोनों ने मिलकर पहले विकेट के लिए 6.2 ओवर में 62 रन जोड़े। ऋतुराज 18 गेंदों का सामना करने के बाद 15 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद सैमसन को आयुष म्हात्रे के रूप में अच्छा जोड़ीदार मिला। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 68 गेंदों में 113 रन की अहम साझेदारी निभाई। आयुष ने इस दौरान 36 गेंदों में 59 रन बनाकर रिटायर्ड आउट हुए। वहीं संजू सैमसन ने 52 गेंदों में आईपीएल में अपना चौथा शतक लगाया। सैमसन ने 56 गेंदों में 15 चौके और 4 छक्कों की मदद से नाबाद 115 रनों की यादगार पारी खेली। वहीं, शिवम दुबे ने 10 गेंदों में नाबाद 20 रन बनाए। गेंदबाजी में दिल्ली की ओर से एकमात्र विकेट अक्षर पटेल ने लिया।

LSG को सपोर्ट करने पहुंची बहन सारा और पत्नी सानिया, अर्जुन तेंदुलकर प्लेइंग इलेवन से बाहर

एजेंसी लखनऊ

इंडियन प्रीमियर लीग 2026 का 19वां मुकाबला लखनऊ सुपर जायंट्स और गुजरात टाइटंस के बीच लखनऊ के इकाना क्रिकेट स्टेडियम में आज यानी 12 अप्रैल को खेला जा रहा है। बता दें कि महान सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन तेंदुलकर इस सीजन आईपीएल में लखनऊ सुपर जायंट्स का हिस्सा हैं। वो ऑक्शन से पहले मुंबई इंडियंस से लखनऊ में ट्रेड हो गए थे। अब अर्जुन तेंदुलकर की बहन सारा तेंदुलकर और पत्नी सानिया चंडोक लखनऊ सुपर जायंट्स को गुजरात टाइटंस के खिलाफ सपोर्ट करने के लिए इकाना क्रिकेट स्टेडियम पहुंची। दोनों को स्टैंड्स में बैठे हुए देखा गया। हालांकि इस मैच में भी अर्जुन को प्लेइंग 11 में मौका नहीं मिला। अब तक अर्जुन लखनऊ के लिए डेब्यू नहीं कर पाए हैं।

गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया था। ऐसे में लखनऊ ने पहले बैटिंग करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 164 रन बनाए थे।

लखनऊ के लिए सर्वाधिक 18 रन एडन मार्करम ने बनाए। उनके अलावा कोई भी खिलाड़ी 20 रन का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाया। गुजरात टाइटंस के लिए सबसे सफल गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा रहे, उन्होंने 28 रन देकर 4 विकेट लिए। यह उनके टी20 करियर का बेस्ट फिगर है। इसके अलावा 2 विकेट अशोक शर्मा ने लिए। 1-1 सफलता मोहम्मद सिराज और कागिसो रबाडा को भी मिली।

बता दें कि दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ पहला मुकाबला हारकर लखनऊ सुपर जायंट्स ने सीजन की शुरुआत की थी। लेकिन, इसके बाद उन्होंने लगातार दो मुकाबले जीते। लखनऊ ने पहले सनराइजर्स हैदराबाद फिर कोलकाता नाइटराइडर्स को हराया। अब अगर उन्हें जीत की हैट्रिक लगानी है तो गुजरात टाइटंस के सामने 165 रन का लक्ष्य डिफेंड करना होगा।

दिग्वेश राठी का विवादित सेलिब्रेशन वापस लौटा, साई सुदर्शन के विकेट के बाद दिखा पुराना रंग

एजेंसी लखनऊ

आईपीएल में लखनऊ सुपर जायंट्स के स्पिनर दिग्वेश राठी के सेलिब्रेशन को लेकर काफी बवाल हो चुका है। पिछले सीजन वह विकेट लेने के बाद बल्लेबाज के करीब आकर नोटबुक सिग्नेचर सेलिब्रेशन करते थे। इसकी वजह से उन्हें कई बार वॉर्निंग मिली। अभिषेक शर्मा का विकेट लेने का बाद उन्होंने ऐसा किया तो दोनों में भयंकर बहस हो गई थी। इसकी वजह से राठी पर एक मैच का बैन भी लगा। उसके बाद उन्होंने अपना सेलिब्रेशन बदल दिया था। वह जमीन पर सिग्नेचर करके जश्न मनाते थे। आईपीएल 2026 के शुरुआती मैचों में दिग्वेश ने विकेट लेने के बाद सिग्नेचर सेलिब्रेशन नहीं किया था। गुजरात टाइटंस के खिलाफ मुकाबले

में दिग्वेश राठी ने लखनऊ के लिए पहला विकेट लिया। उन्होंने साई सुदर्शन को आउट किया। आवेश खान ने उनका कैच लिया। विकेट लेने के बाद दिग्वेश ने अपना सिग्नेचर सेलिब्रेशन किया। उन्होंने जमीन पर सिग्नेचर किया। हालांकि वह बल्लेबाज के आसपास नहीं गए और इसी वजह से कोई विवाद नहीं हुआ।

साई सुदर्शन के बल्ले से 14 गेंदों पर 15 रनों की पारी निकली। दिग्वेश की बात करें तो उन्होंने 4 ओवर में 31 रन दिए और एक विकेट लिया। 26 साल के दिग्वेश राठी ने अभी तक इस सीजन तीन मैच खेले हैं। पहले दो मैचों में उन्होंने 1-1 विकेट ही लिया था।

व्यापार

बातचीत नाकाम रहेगी, अंदेशा हो गया था, तेल बाजार में कुछ ऐसा हुआ जो पहले ही देने लगा सिग्नल

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका और ईरान के बीच सीजफायर पर बातचीत नाकाम रही है। शायद बाजार को इसका अंदेशा था। बाजार में पहले ही तेल खरीदने की होड़ तेज हो चुकी है। इस हफ्ते ईरान में नाजुक युद्धविराम पर निवेशकों ने नजर रखी। दूसरी तरफ ग्लोबल ऑयल मार्केट में कहीं अधिक गंभीर संकट सामने आया। अलग-अलग क्षेत्रों के व्यापारी और रिफाइनर तत्काल कच्चे तेल की सप्लाई सुरक्षित करने के लिए होड़ में जुट गए। इससे फिजिकल एवलेबिलिटी और वायदा कीमतों के बीच बढ़ता अंतर स्पष्ट हो गया। उत्तरी सागर ग्लोबल कच्चे तेल व्यापार का प्रमुख केंद्र है। उसमें मांग सप्लाई से कहीं अधिक थी। व्यापारियों ने कार्गो के लिए 40 बोलियां लगाईं। लेकिन, केवल चार ही प्रस्ताव आए। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, इस असंतुलन ने निकट भविष्य में डिलीवरी के लिए कीमतों को 140 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुंचा दिया, जो तत्काल शिपमेंट के लिए तेल प्रतिस्पर्धा का संकेत है। कीमतों से जुड़े जोखिम का प्रबंधन करना एक बड़ी सिरदर्दी बन गया है। कागजों पर तो मुनाफा शानदार दिखता है। लेकिन, किसी कार्गो को खरीदने और उसे रिफाइन करने का फैसला लेने के बाद असल कैशफ्लो काफी अलग हो सकता है।

अन्य क्षेत्रों में रिफाइनरों ने अपनी खोज का दायरा बढ़ाया। तेजी से दूर के बाजारों से तेल हासिल करना शुरू कर दिया। इस इमरजेंसी के कारण असामान्य व्यापार प्रवाह हुआ। तत्काल डिस्पैच को तैयार कार्गो के लिए प्रीमियम में भारी बढ़ोतरी हुई। बाजार के जानकारों ने कहा कि ये आक्रामक खरीद पैटर्न मिडिल ईस्ट से सप्लाई में व्यवधान के कारण कमी का संकेत देते हैं। आने वाले हफ्तों में उपलब्धता में कमी का बाजार पर भारी दबाव पड़ने की आशंका है। कच्चे तेल की कीमतों में उछाल रिफाइनरों को अपने संचालन पर दोबारा विचार करने के लिए मजबूर कर रहा है। रिपोर्ट

के अनुसार, कुछ यूरोपीय प्रोसेसर बढ़ती इनपुट लागतों से निपटने के लिए जल्द ही एशियाई प्रोसेसरों की तरह उत्पादन में कटौती कर सकते हैं। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट में स्पार्टा कमोडिटीज एएस के अनुसंधान प्रमुख नील क्रॉस्बी ने कहा, 'कच्चे तेल की भारी कमी है। ब्रेंट क्रूड की भौतिक स्थिति खराब है। अब यह बहुत अधिक बढ़ गई है। इस दर से यूरोपीय रिफाइनरों को भी इस्तेमाल कम करना पड़ेगा। शायद अगले महीने की शुरुआत में ही।' हालांकि, रिफाइनरी गतिविधियों में कमी से कच्चे तेल की मांग को स्थिर करने में मदद मिल सकती है। लेकिन, इससे डीजल और जेट ईंधन जैसे आवश्यक ईंधनों की कमी और भी बढ़ सकती है। अलग ही पिक्चर देख रहा है फ्यूचर्स मार्केट दिलचस्प बात यह है कि फिजिकल मार्केट्स में फैली अराजकता फ्यूचर्स सेगमेंट से बिल्कुल उलट है। जून डिलीवरी के लिए तेल की कीमत इस सप्ताह 13 फीसदी घटकर लगभग 95 डॉलर प्रति बैरल पर स्थिर हो गई। युद्धविराम वार्ता को लेकर आशावाद के बीच ऐसा हुआ। हालांकि, वास्तविक सप्लाई बाधाएं एक अलग ही कहानी बयां करती हैं। होर्मुज स्ट्रेट से टैंकरों की सीमित आवाजाही और शिपमेंट में देरी का मतलब है कि राहत तुरंत नहीं मिलेगी। खाड़ी देशों से हासिल कच्चे तेल को एशिया और यूरोप के प्रमुख रिफाइनिंग सेंटरों तक पहुंचने में आमतौर पर कई सप्ताह लग जाते हैं। रिपोर्ट के अनुसार,

अबू धाबी नेशनल ऑयल कंपनी के सीईओ सुल्तान अल जाबेर ने गुरुवार को एक लिंक्डइन पोस्ट में कहा, 'संघर्ष से पहले होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले आखिरी कार्गो अब अपनी मंजिल पर पहुंच रहे हैं। यहीं पर कागजी तौर पर ट्रेड होने वाले बाजार असलियत से रूबरू हो रहे हैं। वैश्विक ऊर्जा प्रवाह में आया 40 दिनों का अंतर पूरी तरह से सामने आ गया है।' मिडिल ईस्ट की सप्लाई पर बहुत ज्यादा निर्भर एशियाई देश कच्चे तेल की वैश्विक खोज में सबसे आगे हैं। जापानी रिफाइनर अमेरिका से तेजी से आयात कर रहे हैं। जबकि चीनी खरीदारों ने कनाडा से शिपमेंट को रिकॉर्ड स्तर तक बढ़ा दिया है। इस बीच, भारतीय रिफाइनरों ने वेनेजुएला से अपनी खरीद में काफी बढ़ोतरी की है। रिपोर्ट के अनुसार, अप्रैल की शुरुआत में खरीद की मात्रा मार्च के मुकाबले दोगुनी हो गई। रिफाइनर लागत के बजाय रफ्तार को प्राथमिकता दे रहे हैं। समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए तेज शिपिंग मार्गों और यहां तक कि छोटे जहाजों का भी चुनाव कर रहे हैं। असल (फिजिकल) कच्चे तेल के प्रीमियम में जबरदस्त उछाल आया है। डेटेड ब्रेंट की कीमत कुछ समय के लिए 144 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थी। इसके बाद यह घटकर 126 डॉलर पर आ गई। फिर भी यह वायदा (फ्यूचर्स) कीमतों से काफी ऊपर है। ट्रेडर तत्काल डिलीवरी वाले कार्गो के लिए भारी प्रीमियम की पेशकश कर रहे हैं, जो कभी-कभी 20 डॉलर प्रति बैरल से भी ज्यादा होता है। असल और वायदा बाजारों के बीच बढ़ती खाई ने रिफाइनरों के लिए चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। फाइनेंसिंग कॉस्ट में इसके कारण भारी बढ़ोतरीहुई है। कीमतों से जुड़े जोखिम का प्रबंधन करना लगातार मुश्किल होता जा रहा है। बड़ी सरिदर्दी बना रस्क मैनेजमेंट मिडहर्स्ट डाउनस्ट्रीम के सलाहकार और सऊदी अरामको के पूर्व रिफाइनिंग अर्थशास्त्री रॉबर्टो उलिविएरी ने रिपोर्ट में कहा, 'कीमतों से जुड़े जोखिम का प्रबंधन करना एक बहुत बड़ी सिरदर्दी बन गया है।

ईरानी तेल पर खतरे के बादल, बातचीत फेल होने के बाद अमेरिका का नया प्लान, भारत के लिए मतलब

एजेंसी नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच ईरानी तेल के नल धड़ल्ले से चलने लगे। युद्ध शुरू होने के बाद से ईरान ने तेल की बिक्री से बंपर कमाई की है। होर्मुज पर कंट्रोल के कारण वह अपने तेल को एक्सपोर्ट कर पा रहा था। वहीं, खाड़ी के कई दूसरे देश सिर्फ उसे ऐसा करते देख रहे थे। लेकिन, दोबारा सीन चेंज हो सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के खिलाफ संभावित नौसैनिक नाकेबंदी का संकेत दिया है। यह हिंट इस्लामाबाद में दोनों पक्षों के बीच बातचीत बिना किसी समझौते के खत्म होने के बाद आया है। भारत के लिए भी इस घटनाक्रम के काफी मायने हैं। 21 घंटे से ज्यादा चली बातचीत के नाकाम होने के कुछ ही घंटों बाद ट्रंप ने एक न्यूज आर्टिकल शेयर किया। इसका टाइटल था, 'ट्रंप का वो 'ट्रंप कार्ड' जो राष्ट्रपति के पास है, अगर ईरान झुकता नहीं है: एक नौसैनिक नाकेबंदी। इसमें वेनेजुएला के खिलाफ अमेरिका की पिछली रणनीति का जिक्र है, जहां तेल से होने वाली कमाई को रोककर अर्थव्यवस्था को घुटनों पर लाने के लिए नौसैनिक नाकेबंदी का इस्तेमाल किया गया था। ब्लूमबर्ग ने पहले एक रिपोर्ट में कहा था कि युद्ध शुरू होने के बाद से ईरान ने तेल की बिक्री से करोड़ों डॉलर की अतिरिक्त कमाई की है। यह फायदा इसलिए हुआ क्योंकि ईरान उन कुछ बड़े निर्यातकों में से एक बना हुआ है जो होर्मुज स्ट्रेट का इस्तेमाल जारी रख पा रहे हैं। वहीं, खाड़ी के दूसरे उत्पादकों से होने वाली खेप में काफी रुकावट आई है। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि अब ईरान पर भी ऐसा ही तरीका आजमाया जा सकता है। कारण है कि अमेरिका के नौसैनिक जहाज पहले से ही इस

इलाके में तैनात हैं। इनमें यूएसएस जेराल्ड फोर्ड और यूएसएस अब्राहम लिंकन कैरियर ग्रुप शामिल हैं। ये निगरानी और कार्रवाई में मदद कर सकते हैं। रिपोर्ट में जिन विशेषज्ञों का जिक्र है, उनका कहना है कि अमेरिकी नेवी होर्मुज स्ट्रेट से होने वाले समुद्री ट्रैफिक पर कंट्रोल कर सकती है। यह दुनिया के लिए तेल का बहुत जरूरी रास्ता है। राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषज्ञ रेबेका ग्रांट ने 'जस्ट द न्यूज' से कहा, 'अमेरिकी नेवी के लिए अब इस स्ट्रेट से क्या गुजरता है और क्या नहीं, इस पर पूरी तरह से कंट्रोल करना बहुत आसान होगा।' उन्होंने आगे कहा कि इस इलाके में नौसैनिक हलचल बढ़ने से यह संकेत मिलता है कि अमेरिका इस संकरे समुद्री रास्ते से गुजरने वाले जहाजों पर नजर रख सकता है और शायद उन्हें रोक भी सकता है। इस आर्टिकल में और भी सख्त विकल्पों का जिक्र है। मसलन, ईरानी तेल के बुनियादी ढांचे को निशाना बनाना या खर्ग द्वीप जैसे तेल निर्यात के अहम ठिकानों पर सीधे तौर पर कब्जा करना। खर्ग द्वीप को ईरान से तेल भेजने का एक जरूरी केंद्र माना जाता है। भारत अपनी तेल जरूरतों का बड़ा हिस्सा खाड़ी देशों से आयात करता है। यह ईरान और ओमान के बीच स्थित पानी के पतले रास्ते हॉर्मुज स्ट्रेट से होकर गुजरता है। अन्य खाड़ी देशों की तुलना में केवल ईरान ही इस मार्ग का निर्बाध इस्तेमाल कर पा रहा है। क्षेत्रीय तनाव के कारण अन्य उत्पादकों की शिपमेंट बाधित रहती है तो भारत की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। तेल की कमी और वैश्विक बाजार में बढ़ती कीमतों का उसे सामना करना पड़ सकता है। भारत के लिए चुनौती यह होगी कि वह अपनी ऊर्जा सप्लाई को स्थिर रखने के लिए ईरान के साथ अपने कूटनीतिक और व्यापारिक संबंधों को कैसे संतुलित करता है। खासकर तब जब अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों का साया अभी भी मौजूद है। इस्लामाबाद में अमेरिका और ईरान के प्रतिनिधिमंडलों के बीच सीधी बातचीत से कोई नतीजा नहीं निकला। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई कर रहे थे। उन्होंने बताया कि बातचीत काफी अहम थी। लेकिन, बिना किसी समझौते के खत्म हो गई। वेंस ने कहा, 'हम पिछले 21 घंटों से इस पर काम कर रहे हैं। हमने ईरानियों के साथ कई अहम बातचीत की है, यह अच्छी खबर है।' उन्होंने आगे कहा, 'बुरी खबर यह है कि हम किसी समझौते पर नहीं पहुंच पाए।' उन्होंने कहा कि अमेरिका ने अपना आखिरी और सबसे अच्छा प्रस्ताव पेश किया था। लेकिन, ईरान ने उन शर्तों को नहीं माना। उन्होंने कहा, 'हम ऐसी स्थिति तक नहीं पहुंच पाए जहां ईरानी हमारी शर्तों को मान लेते।' वेंस ने कहा कि ईरान को परमाणु हथियार हासिल करने से रोकना अमेरिकी राष्ट्रपति का 'मुख्य लक्ष्य' बना हुआ है कूटनीति के रुक जाने के बाद नाकाबंदी की रणनीति को साझा करना आर्थिक और सैन्य दबाव की ओर संभावित बदलाव का संकेत देता है। हालांकि, यह अभी भी साफ नहीं है कि ऐसा कदम कब या कैसे उठाया जाएगा।

सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र का उदाहरण यह समझने के लिए काफी है कि खराब समय में क्या होती है मनुष्य की स्थिति

इंसान अपने मन में बहुत कुछ सोचता है, योजनाएँ बनाता है, लेकिन परिणाम वैसा नहीं मिलता जैसा वह चाहता है। ग्रह-नक्षत्र और परमात्मा की अदृश्य योजना ही सर्वमान्य है। वास्तव में, यह जीवन का अटल सत्य है, मनुष्य का प्रयास यानि कर्म और ब्रह्मांडीय व्यवस्था यानि नियति, दोनों मिलकर ही परिणाम तय करते हैं। सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र का उदाहरण यह समझने के लिए काफी है कि जब समय प्रतिकूल होता है, तो मनुष्य की क्या स्थिति होती है।

कभी-कभी मनुष्य सोचता तो कुछ और है परंतु ग्रह-नक्षत्र और परमात्मा कुछ और ही कर देते हैं। संस्कृत में एक प्रसिद्ध श्लोक याद आता है,

जो बताता है कि, कमलिनी के मध्य एक भँवरा बैठा था कि तभी शाम हुई और कमलिनी बंद हो गई। रात भर भवँरा बंद कोषों में यही सोचता रहा कि सुबह होगी, सूर्योदय होगा, कोष खुलेंगे और मैं निकल जाऊँगा। सुबह होने ही वाली थी कि हाय कितने दुःख की बात है कि एक मदमस्त हाथी आ कर उस कमलिनी को उखाड़ ले गया, जिससे सुबह होकर भी वह फूल खिल ही नहीं पाया। एक चक्रवर्ती सम्राट, जिसका चारों दिशाओं में राज था, उन्हें ग्रहों के फेर और प्रारब्ध के कारण अपना राज्य, परिवार और अंततः स्वयं को भी बेचना पड़ा, वे श्मशान के रखवाले तक बन गए, यह दिखाता है कि ग्रह- नक्षत्र किसी को भी पछाड़ सकते हैं। सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र के इस उदाहरण सहित वर्तमान में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जो समय की प्रतिकूलता को समझने के लिए काफी हैं।

जब प्रभु राम के राजतिलक की तैयारी हो रही थी, तब अचानक ही रातों रात फैसला बदल गया और राम जी को राजगद्दी न मिलकर वनवास मिल जाता है, तब श्रीराम लक्ष्मण जी से यही कहते हैं कि, 'जब कोई बात हमारे अनुरूप न घटित हो तो उसे दैव इच्छा मानना चाहिए। ये दैव अपने कर्म फल भोग जैसे प्रारब्ध की आज्ञा से ही अपना प्रमाण देता रहता है।' शनि को ज्योतिष शास्त्र में न्यायाधीश का दर्जा दिया गया है। जब अशुभ शनि की साढ़ेसाती बड़े-बड़े शक्तिशाली लोगों पर आती है, तो उनका सारा वैभव चूर-चूर हो जाता है। यह सब समय की ताकत है, जो परमात्मा की मर्जी से संचालित हो रही है।

गंगा सप्तमी 22 या 23 अप्रैल, दो दिन बना है सप्तमी तिथि का संयोग, जानें महत्व और पूजा विधि

गंगा सप्तमी का हिंदू धर्म में विशेष महत्व बताया गया है। हर साल वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को गंगा सप्तमी मनाई जाती है। मान्यता है कि इस दिन मां गंगा पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। गंगा सप्तमी को गंगा जयंती के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन गंगा स्नान करने का भी विशेष महत्व माना गया है। इस बार सप्तमी तिथि का संयोग दो दिन होने के कारण 22 और 23 अप्रैल किस दिन गंगा सप्तमी मनाई जाएगी इसे लेकर थोड़ी उलझन बनी हुई है। आइए जानते हैं पंड़ित राकेश झा से किस दिन गंगा सप्तमी मनाना शुभ रहेगा।

गंगा सप्तमी कब है 2026 गंगा सप्तमी तिथि का आरंभ 22 अप्रैल को रात में 10 बजकर 50 मिनट पर होगा और 23 अप्रैल को रात में 8 बजकर 50 मिनट पर तिथि समाप्त होगी। उदया तिथि के अनुसार, सपत्मी तिथि 23 अप्रैल को रहने के कारण इसी दिन गंगा सपत्मी का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन कई लोग व्रत और पूजा भी करते हैं।

गंगा सप्तमी का महत्व पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगीरथ के तप से प्रसन्न होकर मां गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई थी। लेकिन, मां गंगा का वेग इतना तेज था कि अगर वह सीधे पृथ्वी पर आती तो काफी परेशानी हो सकती थी। तब मां गंगा के वेग को भगवान शिव ने अपनी जटाओं में समाहित कर लिया था। मान्यता है कि गंगा सप्तमी के दिन गंगा में स्नान करने से अनजाने में किए गए पापों से मुक्ति मिलती है। साथ ही पितरों की शांति और तर्पण के लिए भी यह दिन अत्यंत शुभ फलदायी माना जाता है।

गंगा सप्तमी के दिन क्या करें

1) इस दिन सुबह जल्दी उठे इसके बाद गंगा में स्नान करें। अगर गंगा में स्नान नहीं कर पा रहें हैं तो घर में ही पानी में थोड़ी गंगाजल मिलाकर आप स्नान कर सकते हैं।

2) इसके बाद एक तांबे के लौचे में पानी लें और उसमें थोड़ा गंगा जल मिलाकर अर्घ्य दें।

3) इसके बाद मंदिर में बैठकर मां गंगा के मंत्र ओम नमो गंगायै विश्वरुपिणी नारायणी नमो नमःका जप करें।

4) इसके अलावा इस दिन जरुरतमंद लोगों को मौसमी फल या बाकी चीजों का दान जरुर करें। इस दिन दान करने से दोगुना फल प्राप्त होता है।

आज वरुथिनी एकादशी पर करें इस कथा का पाठ, भगवान विष्णु की रहेगी विशेष कृपा

वरुथिनी एकादशी हिंदू धर्म में अत्यंत पुण्यदायी मानी जाती है और यह व्रत विशेष रूप से भगवान विष्णु के वराह अवतार को समर्पित है। इस व्रत की कथा प्राचीन काल के महान और धर्मपरायण राजा मांधाता से जुड़ी हुई है। आइए जानते हैं व्रत कथा के बारे में

कहा जाता है कि राजा मांधाता एक न्यायप्रिय और सत्यवादी शासक थे, जिनके राज्य में चारों ओर सुख, शांति और समृद्धि का वातावरण था। वे भगवान विष्णु के परम भक्त थे और हमेशा धर्म के मार्ग पर चलते हुए अपनी प्रजा का पालन करते थे। एक समय की बात है, राजा मांधाता वन में जाकर कठोर तपस्या कर रहे थे। वे गहन ध्यान में लीन थे, तभी अचानक एक जंगली भालू (कुछ कथाओं में सिंह) ने उन पर हमला कर दिया। उस हिंसक पशु ने राजा को गंभीर रूप से घायल कर दिया और उनका एक पैर तक चबा डाला। अत्यधिक पीड़ा में होने के बावजूद भी राजा का मन भगवान विष्णु की भक्ति से विचलित नहीं हुआ और वे निरंतर उनका स्मरण करते रहे।

राजा की अटूट भक्ति और श्रद्धा से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु प्रकट हुए और उन्होंने राजा को उस संकट से बचाया। भगवान ने राजा से कहा कि यह कष्ट उनके पूर्व जन्म के कर्मों का फल है, लेकिन यदि वे विधिपूर्वक वरुथिनी एकादशी का व्रत करें, तो उन्हें इस पाप से मुक्ति मिल सकती है। भगवान के आदेश का पालन करते हुए राजा मांधाता ने पूर्ण श्रद्धा, नियम और विधि के साथ वरुथिनी एकादशी का व्रत रखा। इस व्रत के प्रभाव से राजा मांधाता का शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया और उनका खोया हुआ पैर भी वापस प्राप्त हो गया। साथ ही उनके सभी पाप नष्ट हो गए और उन्हें पुनः सुख, वैभव और यश की प्राप्ति हुई। इस प्रकार वरुथिनी एकादशी का व्रत अत्यंत प्रभावशाली और कल्याणकारी माना गया है।

यह कथा हमें यह संदेश देती है कि सच्ची भक्ति, श्रद्धा और व्रत के पालन से मनुष्य अपने जीवन के कष्टों और पापों से मुक्ति पा सकता है। वरुथिनी एकादशी का व्रत न केवल आध्यात्मिक उन्नति देता है, बल्कि जीवन में सुख, समृद्धि और सौभाग्य भी प्रदान करता है। इस दिन व्रत और भगवान विष्णु की पूजा करने से व्यक्ति को महान पुण्य की प्राप्ति होती है और उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं।

आर्थिक राशिफलः शॉर्टकट के बजाय बारीकियों पर ध्यान दें, सफलता मिलने की प्रबल संभावना

मेष राशि आज पैसे के मामलों में बहुत ही अनुशासित रहने की जरूरत है। आपके लाभ के ग्यारहवें भाव में राहु और चंद्रदेव की मौजूदगी अचानक धन लाभ का संकेत तो दे रही है, लेकिन बारहवें भाव का भारी प्रभाव आपको फिजूलखर्ची के लिए उकसा सकता है। बजट बनाकर चलें और ऐसी किसी भी जल्द अमीर बनने वाली योजना से दूर रहें जिसका आधार मजबूत न हो।

वृषभ राशि वित्तीय दृष्टि से आज का दिन स्थिर रहेगा, लेकिन लग्जरी चीजों की चाहत आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ा सकती है। बृहस्पतिदेव की कृपा से आपकी मुख्य आय बनी रहेगी, फिर भी मीन राशि के ग्रहों का प्रभाव कहता है कि दोस्तों या बड़े संगठनों से जुड़ें निवेश में सावधानी बरतें। आज किसी को भी पैसा उधार देने से बचना ही आपके हित में होगा।

मिथुन राशि आज पैसों के लेनदेन में रूढ़िवादी और सुरक्षित तरीका अपनाएं। कार्यक्षेत्र में अपनी साख बचाने के चक्कर में जल्दबाजी में निवेश करने से बचें। जान-पहचान वालों को पैसा उधार न दें, क्योंकि नौवें भाव में चंद्र-राहु की स्थिति आपको गलत सलाह पर भरोसा करने के लिए मजबूर कर सकती है। आज ऐसी सलाह से बचें जिनमें से फैक्ट्स की कमी है।

कर्क राशि आज साझा व्यापार, टैक्स या निवेश से जुड़े मामलें चर्चा में रहेंगे। चंद्र-राहु की युति बताती है कि कर्ज या निवेश को संभालने का कोई नया और अलग तरीका सफल हो सकता है। हालांकी, नौवें भाव के ग्रहों के कारण ऐसी किसी भी वित्तीय सलाह से सावधान रहें जो जरूरत से ज्यादा अच्छी लग रही है। वही करें जो नैतिक रूप से सही हो।

सिंह राशि आज का दिन सावधानी बरतने और ऑडिट करने का है। मीन राशि के ग्रहों का जमावड़ा टैक्स, बीमा या सहज निवेश से जुड़े मामलों में उलझन पैदा कर सकता है। बुद्धदेव की स्थिति बेहतर होने तक कोई बड़ा वित्तीय फैसला न लें और कोई भी नए संयुक्त उद्यम पर हस्ताक्षर न करें। अपनी आर्थिक सुरक्षा के लिए निजी खर्च पर लगाम लगाना जरूरी है।

कन्या राशि पैसों के मामलों में आज हाथ थोड़ा खींच कर रखना ही सही होगा। आठवें भाव में शुक्रदेव निवेश की इच्छा तो जगाएंगे, लेकिन नीच के बुद्धदेव किसी भी जटिल वित्तीय योजना में फंसने से बचने की चेतावनी दे रहे हैं। अपने बजट पर टिके रहें और लाइफस्टाइल को अपग्रेड करने के नाम पर फिजूलखर्ची न करें। पुराने खातों को व्यवस्थित करने पर ध्यान दें।

तुला राशि आर्थिक स्थिरता बनी रहेगी, हालांकी आपका मन मनोरंजन या कोई क्रिएटिव काम पर खर्च करने का हो सकता है। बृहस्पतिदेव आपकी समृद्धि का समर्थन कर रहे हैं, लेकिन छठे भाव के ग्रह कहते हैं कि लाइफस्टाइल के चक्कर में नया कर्ज या वित्तीय जिम्मेदारी न लें। अपने तय बजट पर चलें और भविष्य की सुरक्षा पर ध्यान दें।

वृश्चिक राशि वित्तीया मसलों को आज सधे हुए अंदाज में संभालने की जरूरत है। बृहस्पतिदेव आपकी संपत्ति की रक्षा कर रहे हैं, लेकिन वर्तमान ग्रह की स्थिति उच्च जोखिम वाले निवेश से बचने की सलाह देती है। घर की मरम्मत या परिवार की जरूरतों पर खर्च हो सकता है, बस सुनिश्चित करें कि ये खर्च प्रैक्टिकल हो, भावनात्मक नहीं। सोशल गैदरिंग में मिलने वाली इन्वेस्टमेंट टिप से दूर रहें।

धनु राशि घर या जमीन से जुड़ें वित्त मामलों को बहुत सावधानी से संभालें। बृहस्पतिदेव के कारण आपका भाग्य स्थिर है, लेकिन मीन राशि के गृह रिश्तेदारों को पैसा उधार देने या कानूनी सलाह के बिना संपत्ति में निवेश करने के खिलाफ चेतावनी दें रहे हैं। आज अपने दैनिक बजट का पालन करें और मुमकिन हो तो महंगे इलेक्ट्रॉनिक्स की खरीददारी टाल दें।

मकर राशि आज धन का सावधानी से उपयोग करें। कुंभ राशि के चंद्रमा आपको निवेश के आधुनिक तरीकों की ओर प्रेरित करेगा, लेकिन राहु का प्रभाव काल्पनिक मुनाफे से बचने की चेतावनी देता है। अपने बैंक स्टेटमेंट और खातों को सही से रखें। जान-पहचान वालों को उधार न दें, क्योंकि तीसरे भाव के ग्रहों के कारण भविष्य में भुगतान को लेकर विवाद हो सकता है।

कुंभ राशि आज वित्तीय अनुशासन की सख्त जरूरत है। मीन राशि के ग्रह संकेत दे रहे हैं कि आपकी आय के स्रोत एक बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। सट्टेबाजी या जोखिम भरे कामों से बचें, क्योंकि बुद्धदेव की स्थिति आपकी निर्णय लेने की क्षमता को धुंधला कर सकती है। वर्तमान संसाधनों को व्यवस्थित करने पर ध्यान दें और विलासिता की चीजों पर पैसा बर्बाद न करें।

मीन राशिः पैसों के मामलों में आज चौकना रहने की जरूरत है। आपकी ही राशि में बुद्धदेव कमजोर हैं, जिससे आप निजी हिसाब-किताब में जरूरी बारीकियों को नजरअंदाज कर सकते हैं। कुंभ के चंद्रमा आधुनिक आय के स्रोतों में उम्मीद जगा रहे हैं। राहुदेव चेतावनी दे रहे हैं कि कोई आध्यात्मिक या लक्जरी यात्रा पर भावनाओं में बहकर पैसा खर्च न करें।

गणेश जी की पूजा में तुलसी क्यों नहीं चढ़ाई जाती, जानें क्या कहता है शास्त्र

एक पौराणिक कथा है, जिसके अनुसार माता तुलसी ने भगवान गणेश के ब्रह्मचारी होने के बावजूद उनसे विवाह का प्रस्ताव रखा था। गणेश जी द्वारा मना करने पर क्रोधित होकर तुलसी ने उन्हें दो विवाह का श्राप दिया, जिसके फलस्वरूप गणेश जी ने उन्हें राक्षस से विवाह का श्राप दिया, कहा जाता है, इसीलिए गणेश पूजा में तुलसी वर्जित मानी गई हैं। पौराणिक कथा के अनुसार एक दिन देवी तुलसी गंगा तट पर भ्रमण कर रही थीं। उसी समय उन्होंने भगवान गणेश को गहरे ध्यान में लीन देखा। गणेश जी तप में बैठे थे और उनका मन पूर्ण रूप से ईश्वर चिंतन में लगा हुआ था। निष्ठापर्वूक तपस्या के तेज ने देवी तुलसी को उनकी ओर आकर्षित किया, जिसके कारण देवी तुलसी ने गणेश जी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। गणेश जी ने यह सुनते ही देवी तुलसी से कहा कि वे विवाह नहीं करना चाहते और उनका जीवन तप तथा धर्म के मार्ग के लिए समर्पित है।

जनश्रुति है यह सुनकर देवी तुलसी को क्रोध आ गया, उन्होंने आवेश में आकर गणेश जी को श्राप दे दिया कि उनके दो विवाह होंगे।

तुलसी जी के इस विचित्र व्यवहार से गणेश जी दुखी हुए, उनके मुख से भी तुलसी के लिए भी एक श्राप निकला, उन्होनें कहा कि तुम्हारा विवाह एक असुर से होगा, इसी श्राप के कारण तुलसी का विवाह राक्षस कुल में दानव राज जलंधर से हुआ। जब देवी तुलसी को अपनी गलती का एहसास हुआ तो उन्होंने गणेश जी से क्षमा मांगी। इस पर गणेश जी ने कहा कि, 'आप भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय होगी और उनकी पूजा में आपका विशेष महत्व रहेगा। श्राप के कारण आज भी गणेश भक्त उनकी पूजा में तुलसी पत्र भूलकर भी नहीं चढ़ाते हैं।' तभी से श्रीरहरि भगवान विष्णु की पूजा में तुलसी का बहुत महत्व माना जाता है, जबकि गणेश पूजा में तुलसी पत्र अर्पित नहीं किए जाते।

नल-जल के स्वप्न सूखे,प्यासे आंगनों की करुण कथा सारनी के वार्ड 4 में व्यवस्था बेनकाब

13 सौ मतदाताओं का वार्ड, 8 सौ से अधिक घरों में जल संकट शिकायतों के बाद भी नहीं पिघली व्यवस्था

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा हर घर नल-जल का जो स्वप्न साकार करने का संकल्प लिया गया था,वह विद्युत नगरी सारनी के वार्ड क्रमांक 4 में आकर मानो सूखी धरती पर बिखरते मृगतृष्णा सा प्रतीत हो रहा है।लगभग 13 सौ मतदाताओं वाले इस वार्ड में 8 सौ से अधिक घर आज भी पेयजल के लिए व्याकुल हैं, लेकिन जिम्मेदार तंत्र मौन साधे बैठा है।नगर पालिका परिषद सारणी द्वारा शहर में लगभग 13 हजार घरों को नल कनेक्शन देने के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन वार्ड क्रमांक 4 की हकीकत इन दावों की परतें उधेड़ती नजर आ रही है।बीते तीन से चार महीनों से यहां नियमित जल आपूर्ति पूरी तरह ठप पड़ी है, जिससे वार्डवासी बूंद-बूंद पानी के लिए जूझने को विवश हैं।जल संकट से त्रस्त नागरिकों ने नगर पालिका परिषद सारनी और शासन की 181 हेल्पलाइन पर कई बार शिकायतें दर्ज कराईं, लेकिन इन प्रयासों का परिणाम शून्य ही रहा। स्थिति तब और गंभीर हो गई जब वार्ड निवासी प्रिया वर्मा द्वारा सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा कर इस समस्या को उजागर किया गया,जो तेजी से वायरल भी हुआ।इसके बाद व्यवस्था के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी।

वार्ड के पार्षद किरण झारबड़े के अनुसार,लगभग एक अरब 8 करोड़ रुपये की लागत से नल-जल योजना के अंतर्गत पहले 15 हजार कनेक्शन दिए गए थे,जिनमें से 2 हजार अनावश्यक कनेक्शन हटाए गए।वर्तमान में 36 वार्डों में 13 हजार कनेक्शन सक्रिय हैं,लेकिन वार्ड क्रमांक 4 में पानी की आपूर्ति न होना पूरी योजना की कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।इतना ही नहीं, लक्ष्मी इंजीनियरिंग कंपनी के कर्मचारियों और इंजीनियरों पर यह गंभीर आरोप भी लगे हैं कि वे 181 में शिकायत करने वाले उपभोक्ताओं को मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हैं और शिकायत वापस लेने का दबाव बनाते हैं।यदि कोई शिकायत वापस नहीं लेता,तो उसे पानी के लिए तरसने को मजबूर कर दिया जाता है।ऐसे हालात में हर घर नल-जल योजना का सपना वार्ड क्रमांक 4 में दम तोड़ता नजर आ रहा है।नगर पालिका के अधिकारी, कर्मचारी और जनप्रतिनिधि इस विकट स्थिति में भी निष्क्रिय बने हुए हैं,जिससे प्यासे घरों की यह पीड़ा अब एक गूंगी चीख बनकर रह गई है।

कोयले की कालिख में दबे हक ठेका मजदूरों की खामोशी में गूंजता शोषण

जहां आवाज उठनी थी,वहीं सन्नाटा पाथाखेड़ा की खदानों में मजदूरों का संघर्ष बना मजबूरी

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

धरती की गहराइयों में उतरकर देश की ऊर्जा को रोशन करने वाले हाथ,आज खुद अंधेरों में घिरते नजर आ रहे हैं।वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की पाथाखेड़ा स्थित भूमिगत खदानों में ठेका मजदूरों का दर्द अब केवल श्रम नहीं,बल्कि एक मौन संघर्ष की कहानी बन चुका है।विडंबना यह है कि जिन श्रमिक संगठनों से हक की लड़ाई की उम्मीद थी,उनकी चुप्पी ने इस शोषण को जैसे वैधता दे दी है।परिणामस्वरूप,ठेका मजदूरों का आर्थिक दोहन अब एक आम चलन बनता जा रहा है।

मजदूरों के अनुसार,भूमिगत खदान में कार्यरत श्रमिकों के लिए निर्धारित दैनिक मजदूरी लगभग 1365 रुपए है, लेकिन हकीकत में उन्हें मात्र 500 से 600 रुपए प्रतिदिन थमा दिए जाते हैं।जहां 26 दिनों के श्रम का पारिश्रमिक करीब 35,490 रुपए होना चाहिए,वहीं इन मेहनतकश हाथों को केवल 10 से 12 हजार रुपए देकर उनकी मेहनत का मोल कुचल दिया जा रहा है।स्थिति तब और गंभीर हो जाती है,जब आरोप श्रम व्यवस्था की निगरानी करने वाले अधिकारियों तक पहुंचते हैं।मजदूरों का कहना है कि श्रम अधिकारी भी ठेकेदारों के साथ खड़े नजर आते हैं,जिससे न्याय की उम्मीद और भी क्षीण हो जाती है।इतना ही नहीं, खदानों में रोजगार की स्थिरता भी अब एक भ्रम बन चुकी है।पुराने मजदूरों को दरकिनार कर नए श्रमिकों को कम दरों पर काम पर रखा जा रहा है,जिससे अनुभवी श्रमिक बेरोजगारी की कगार पर खड़े हैं।यह न केवल श्रम कानूनों का उल्लंघन है,बल्कि मानवाधिकारों पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है।

सुरक्षा के मोर्चे पर भी हालात चिंताजनक हैं।बिना आवश्यक प्रशिक्षण और प्रमाणपत्रों के मजदूरों को बारूद ढुलाई जैसे जोखिमपूर्ण कार्यों में लगाया जा रहा है।यहां तक कि मेडिकल रूप से अयोग्य श्रमिकों से भी काम लिया जा रहा है,जो किसी भी बड़े हादसे की आहट को जन्म दे सकता है।सबसे पीड़ादायक पहलू यह है कि जो मजदूर अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाते हैं,उन्हें काम से बाहर कर उनकी तस्वीरें खदान परिसर में चस्पा कर प्रतिबंधित कर दिया जाता है। यह कदम न केवल उनकी रोजी-रोटी छीनता है,बल्कि उनके आत्मसम्मान को भी गहरी ठेस पहुंचाता है।एक ऐसा धुआं,जो न केवल आंखों में चुभता है,बल्कि व्यवस्था की संवेदनहीनता को भी उजागर करता है।

कार्यालय गायब बैठक लाजवाब! सारनी में कांग्रेस की मठारदेव मॉडल राजनीति दफ्तर नहीं मिला तो प्रांगण सही समीक्षा,सुझाव और भोजन के साथ चुनावी मंथन

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

141 साल पुरानी कांग्रेस, सारणी में 'बिना पते' की राजनीति!
कार्यालय नदारद, पदाधिकारी सड़क पर चाय पान और रसवंती बनी स्थायी बैठक व्यवस्था

कांग्रेस संगठन इन दिनों एक अनोखे प्रयोग से गुजर रहा है,जहां पार्टी के पास पदाधिकारी तो भरपूर हैं।लेकिन बैठने के लिए स्थायी कार्यालय अभी भी खोज अभियान पर है।कल प्रकाशित समाचार में भी यह मुद्दा प्रमुखता से उभरा था कि 141 साल पुरानी पार्टी को सारनी क्षेत्र में अब तक अपना ठिकाना नसीब नहीं हो पाया है,और आज उसी कड़ी में एक और दिलचस्प अध्याय जुड़ गया।कार्यालय के अभाव में परेशान कार्यकर्ताओं की समस्या का समाधान इस बार आध्यात्मिक-राजनीतिक संगम के रूप में निकला है। सारनी ब्लॉक अध्यक्ष बटेश्वर भारती ने सोमवार को सुबह 11 बजे बाबा मठारदेव महाराज प्रांगण में ब्लॉक कांग्रेस कमेटी की समीक्षा बैठक बुला ली है।यानी जहां दफ्तर नहीं,वहां दरबार ही सही !बैठक में महिला कांग्रेस, एनएसयूआई,यूथ कांग्रेस,सेवादल और इंटक यूनियन के पदाधिकारियों को अनिवार्य रूप से उपस्थित होने का आग्रह किया गया है। साथ ही नवगठित बूथ लेवल (BLO) कमेटियों,पार्षदों और नगर पालिका चुनाव के संभावित दावेदारों को भी बुलाया गया है,ताकि एक ही मंच पर संगठन की जमीनी हकीकत और आकांक्षाओं की ऊंचाई दोनों का संतुलन देखा जा सके।बैठक का मुख्य एजेंडा भी कम दिलचस्प नहीं है।मेरे कार्यकाल में क्या और कितना काम हुआ की समीक्षा के साथ-साथ ज्वलंत मुद्दों पर विचार-विमर्श और सुझाव लिए जाएंगे।अब देखना यह होगा कि बिना कार्यालय के संगठन की उपलब्धियां कितनी ठोस निकलती हैं,या फिर चर्चा भी खुले आसमान की तरह व्यापक ही रह जाती है।खास बात यह है कि बैठक के बाद भोजन की व्यवस्था भी रखी गई है,जिससे यह अंदेशा जताया जा रहा है कि कार्यकर्ता समीक्षा से ज्यादा व्यवस्था को लेकर उत्साहित नजर आ सकते हैं।कुल मिलाकर,सारनी में कांग्रेस की राजनीति इस समय दफ्तर की तलाश और चुनावी तैयारी के बीच झूलती हुई दिखाई दे रही है।जहां सवाल वही पुराना है, कार्यालय कब मिलेगा, और जवाब हर बार नया मंच खोज लेता है।अब देखना यह है कि मठारदेव प्रांगण में होने वाली यह बैठक संगठन को नई दिशा देती है,या फिर अगली बैठक के लिए एक और नया अस्थायी पता तय करती है।

डॉक्टर सौरभ सोनवणे ने संभाला बैतूल कलेक्टर का पदभार, तीसरे प्रयास में UPSC क्रैक कर बने IAS, रीवा में भी दे चुके हैं सेवाएं

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने रविवार को बैतूल जिले के नए कलेक्टर का पदभार ग्रहण कर लिया। इस अवसर पर अपर कलेक्टर वंदना जाट, संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद और एसडीएम डॉ. अभिजीत सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

मध्य प्रदेश शासन के सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश के तहत, 2017 बैच के आईएएस अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे को बैतूल कलेक्टर नियुक्त किया गया है। कलेक्ट्रेट पहुंचने पर अपर कलेक्टर सहित अन्य अधिकारियों ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया।

डॉ. सोनवणे इससे पहले रीवा में नगर निगम आयुक्त सहित कई महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। उनके प्रशासनिक अनुभव को जिले के विकास कार्यों में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

डॉ. सौरभ सोनवणे का जन्म 1991 में महाराष्ट्र के जलगांव में हुआ था। उनका बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता, जहां उनके पिता मेडिकल ऑफिसर थे। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव के सरकारी स्कूल से प्राप्त की और आगे की पढ़ाई जलगांव में पूरी की। मुंबई के ग्रैंड मेडिकल कॉलेज से उन्होंने मेडिकल की पढ़ाई की और डॉक्टर के रूप में भी काम किया। तीसरे प्रयास में यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण कर वे 2017 बैच के आईएएस अधिकारी बने। छात्र जीवन में वे एनसीसी कैडेट भी रहे और राजपथ पर महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले डॉ. सोनवणे का मानना है कि पद और प्रतिष्ठा स्थायी नहीं होते, बल्कि व्यक्ति का व्यवहार ही उसकी असली पहचान बनाता है। निवर्तमान कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी को अब रीवा कलेक्टर के रूप में पदस्थ किया गया है। 2012 बैच के आईएएस अधिकारी सूर्यवंशी जनवरी 2024 से अप्रैल 2026 तक बैतूल कलेक्टर रहे। उनके कार्यकाल में 'आदि कर्मयोगी अभियान' और 'जल संचय-जन भागीदारी' जैसे अभियानों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। टीबी उन्मूलन, निर्वाचन और प्रशासनिक डिजिटाइजेशन में बेहतर कार्य के लिए जिले को सम्मान और सराहना भी प्राप्त हुई। वे अपनी सख्त और सक्रिय प्रशासनिक शैली, भू-माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई और देर रात निरीक्षण के लिए भी जाने जाते हैं।

मुलताई में गेहूं की 8 एकड़ फसल जलकर राख:तीन किसानों को लाखों का नुकसान, आग पर फायर बिग्रेड ने पाया काबू

दैनिक कारखाने का सफर। मुलताई

मुलताई के ग्राम बम्हनी में रविवार दोपहर करीब 1 बजे आग लगने से भारी नुकसान हो गया। सजन सिंह रघुवंशी, अमीर सिंह रघुवंशी और मोटू साहू के खेतों में खड़ी गेहूं की फसल अचानक धधक उठी। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और सब कुछ जलकर खाक हो गया। तेज गर्मी और सूखी फसल होने की वजह से आग बहुत तेजी से फैली। इस हादसे में लगभग 7 से 8 एकड़ में लगी गेहूं की फसल पूरी तरह जलकर राख हो गई। आग की लपटें इतनी ऊंची थीं कि पास के दूसरे खेतों को भी अपनी चपेट में लेने का डर बना हुआ था। गांव वालों ने अपने स्तर पर आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन कामयाबी नहीं मिली। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची। ड्राइवर भूपेंद्र राठौर और गिरीश पिपले की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। समय रहते आग बुझ जाने से आसपास के दूसरे खेत जलने से बच गए, जिससे एक बड़ी तबाही टल गई। फसल में लगी आग की ऊंची-ऊंची लपटें उठीं। लाखों का नुकसान, मुआवजे की मांग फिलहाल आग लगने की सही वजह पता नहीं चल पाई है। परेशान ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि जल्द से जल्द नुकसान का सर्वे कराया जाए और पीड़ित किसानों को उचित मुआवजा दिया जाए।

मुलताई नपाध्यक्ष पद पर 5 दिन से असमंजस हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी स्थिति स्पष्ट नहीं, CMO बोले- अधिकारियों से करेंगे चर्चा

दैनिक कारखाने का सफर। मुलताई

मुमुलताई नगर पालिका परिषद में अध्यक्ष पद को लेकर पिछले छह दिनों से असमंजस की स्थिति बनी हुई है। उच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा है कि वर्तमान में अध्यक्ष कौन है। इस अनिश्चितता के कारण प्रशासनिक स्तर पर भी स्थिति साफ नहीं हो सकी है, जिससे नगरवासियों में भ्रम की स्थिति है। मंगलवार को नगर पालिका की पूर्व अध्यक्ष नीतू परमार ने कांग्रेस समर्थित पार्षदों के साथ मुख्य नगर पालिका अधिकारी (सीएमओ) वीरेंद्र तिवारी के समक्ष अध्यक्ष पद ग्रहण करने के लिए आवेदन प्रस्तुत किया। यह आवेदन उन्होंने उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए आदेश के बाद दिया था। जिसमें नीतू परमार को निरंतर नेतृत्व करने को कहा गया है। सीएमओ वीरेंद्र तिवारी ने इस मामले में वरिष्ठ अधिकारियों से मार्गदर्शन मांगा है। उनका कहना है कि अभी तक उन्हें इस संबंध में कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश प्राप्त नहीं हुए हैं। मार्गदर्शन मिलने के बाद ही आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। सीएमओ को अध्यक्ष पद के दावे का पत्र सौंपते कांग्रेसी पार्षद।

इस बीच, उच्च न्यायालय के आदेश के बाद वर्तमान अध्यक्ष वर्षा गडेकर की स्थिति भी स्पष्ट नहीं मानी जा रही है, जिससे अध्यक्ष पद को लेकर जटिलता और बढ़ गई है। नगर पालिका कार्यालय में बीते पांच दिनों से यही चर्चा का विषय बना हुआ है कि अध्यक्ष की कुर्सी पर आखिर कौन बैठेगा। एक ओर नीतू परमार अपने अधिकार का दावा कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर वर्षा गडेकर की स्थिति भी स्पष्ट नहीं है। इस असमंजस के कारण नगर पालिका के प्रशासनिक कामकाज पर आंशिक असर पड़ने की आशंका जताई जा रही है। नगरवासी भी जल्द से जल्द स्थिति स्पष्ट करने की मांग कर रहे हैं ताकि विकास कार्य प्रभावित न हों। नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुमित शिवहरे ने कहा है कि वे इस संबंध में सोमवार को वरिष्ठ अधिकारियों से मिलेंगे। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि नीतू परमार को प्रभार नहीं दिया जाता है, तो कानूनी सलाह ली जाएगी और आगे की कार्रवाई की जाएगी।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949